CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2004 with Solution PDF-Set 2/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 128

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 13 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

काहे रे बन खोजन जाई ।

सर्व निवासी सदा अलेपा तोहि संग समाई ।।

पुहुप मध्य ज्यौं बास बसत है मुकुर माँहि जस छाँईं ।

तैसे ही रहि बसै निरंतर घट ही खोजो भाई ।।

बाहर भीतर एकै जानौ यह गुरु ज्ञान बताई ।

भन 'नानक' बिन आपा चीन्हे मिटे न भ्रम की काई ।। [7 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में कवि और रचना का संदर्भ देकर पंक्तियों का क्रमवार अर्थ तथा उनका केंद्रीय संदेश स्पष्ट किया जाता है।
- इस शबद में ईश्वर की सर्वव्यापकता, अंतर्मुखी साधना और आत्मज्ञान का महत्त्व प्रतिपादित है। बाहरी खोज के स्थान पर अपने अंत:करण में परमात्मा की अनुभूति करने का उपदेश दिया गया है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियाँ गुरु नानक के शबद 'काहे रे बन खोजन जाई' से उद्धृत हैं। इनमें कवि उस साधक को संबोधित करता है जो ईश्वर को पाने के लिए वन में भटकता है। गुरु नानक उसे समझाते हैं कि परमात्मा मनुष्य से दूर किसी विशेष स्थान में नहीं, बल्कि उसके अपने भीतर भी विद्यमान है। अत: ईश्वर की प्राप्ति के लिए आत्मचिंतन और आत्मपहचान आवश्यक हैं।

चरण 2: ईश्वर की सर्वव्यापकता की व्याख्या 'काहे रे बन खोजन जाई' में कवि पूछता है कि मनुष्य परमात्मा को खोजने के लिए वन में क्यों जाता है। जो ईश्वर सभी प्राणियों और स्थानों में निवास करता है, वह साधक के साथ भी समाया हुआ है। 'सदा अलेपा' का आशय है कि सबमें स्थित होकर भी परमात्मा सांसारिक विकारों और मोह से निर्लिप्त रहता है। इस प्रकार संसार में उसकी उपस्थिति और उससे उसकी निर्लिप्तता, दोनों बातें एक साथ स्पष्ट होती हैं।

चरण 3: पुष्प और दर्पण के उदाहरणों का आशय जिस प्रकार फूल के भीतर सुगंध बसी रहती है और दर्पण में प्रतिबिंब दिखाई देता है, उसी प्रकार परमात्मा मनुष्य के हृदय में निरंतर विद्यमान है। सुगंध पाने के लिए फूल को छोड़कर कहीं और जाने की आवश्यकता नहीं होती। इसी तरह अपने भीतर बसे ईश्वर को बाहर भटककर खोजने के बजाय साधक को अपने अंत:करण में उसकी अनुभूति करनी चाहिए। 'घट ही खोजो भाई' में घट का अर्थ शरीर अथवा हृदय है। 'भाई' संबोधन उपदेश को आत्मीय और सहज बनाता है।

चरण 4: गुरुज्ञान और आत्मपहचान का संदेश गुरु का दिया ज्ञान यह है कि बाहर और भीतर एक ही परमात्मा को समझो। ईश्वर को केवल किसी एक स्थान तक सीमित मानना अज्ञान है। अंतिम पंक्ति में नानक कहते हैं कि अपने वास्तविक स्वरूप को पहचाने बिना भ्रम की काई नहीं मिटती। जैसे काई किसी सतह को ढक देती है, वैसे ही अज्ञान मनुष्य के विवेक को ढक देता है। आत्मज्ञान उस आवरण को दूर करता है और साधक को अपने भीतर तथा समस्त जगत में एक ही परम सत्ता का बोध होता है।

चरण 5: काव्यगत विशेषताएँ सरल लोकभाषा और सीधे संबोधन से गूढ़ आध्यात्मिक विचार सहज हो गया है। 'ज्यौं' और 'जस' के प्रयोग से पुष्प-सुगंध तथा दर्पण-छाया की उपमाएँ निर्मित हुई हैं। 'भ्रम की काई' में भ्रम को काई का रूप दिया गया है, इसलिए यहाँ रूपक का सौंदर्य है। प्रश्नात्मक आरंभ साधक को सोचने के लिए प्रेरित करता है और उदाहरण उपदेश को प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 6: निष्कर्ष इस शबद का केंद्रीय भाव है कि सर्वव्यापी और निर्लिप्त परमात्मा मनुष्य के भीतर ही विद्यमान है। गुरु के ज्ञान से आत्मपहचान विकसित करके तथा अज्ञान और भ्रम दूर करके उसकी अनुभूति की जा सकती है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या लिखते समय 'अलेपा', 'घट' और 'भ्रम की काई' के अर्थ अवश्य खोलें तथा पुष्प-सुगंध के उदाहरण को अंतर्मुखी साधना से जोड़ें।

1(ख). निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

ये ऊगी बिन ऊगी फ़सलें
तेरी प्राण कहानी
हर रोटी ने, रक्त बूँद ने
तेरी छवि पहचानी ।
वायु तुम्हारी उज्ज्वल गाथा
सूर्य तुम्हारा रथ है,
बीहड़ काँटों भरा कीचमय
एक तुम्हारा पथ है।
यह शासन, यह कला, तपस्या
तुझे कभी मत भूलें ।
ये अनाज की पूलें
तेरे काँधे झूलें ।

[7 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में संदर्भ, क्रमवार भावार्थ और काव्य-सौंदर्य के माध्यम से अंश का पूरा आशय स्पष्ट करना चाहिए।
- प्रस्तुत काव्यांश किसान के श्रम, त्याग और कठिन जीवन का सम्मान करता है। समाज की भोजन-व्यवस्था और सभ्यता के आधार के रूप में उसकी भूमिका दिखाई गई है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत काव्यांश माखनलाल चतुर्वेदी की रचना से लिया गया है। कवि किसान को संबोधित करके उसके परिश्रम का गौरव गाता है। फसल और अन्न केवल खेत की उपज नहीं हैं; वे किसान की जीवन-साधना, आशाओं और संघर्ष की कहानी भी कहते हैं। कवि चाहता है कि समाज किसान के इस योगदान को पहचाने और उसे उचित आदर दे।

चरण 2: फसलों में किसान की जीवन-कथा 'ये ऊगी बिन ऊगी फ़सलें' में उग चुकी और अभी न उगी फसलों, दोनों को किसान की प्राण-कहानी बताया गया है। तैयार फसल में उसका बीता परिश्रम झलकता है और आगामी फसल में उसकी आशा तथा निरंतर श्रम का संकल्प दिखाई देता है। प्रत्येक रोटी उसके श्रम का फल है। 'रक्त बूँद' किसान के जीवन-समर्पण और कठोर परिश्रम का बोध कराती है। अन्न से मिलने वाले जीवन और शक्ति के पीछे उसकी साधना है; इसीलिए रोटी और रक्त की बूँद में उसकी छवि पहचाने जाने की बात कही गई है।

चरण 3: प्रकृति के बीच श्रम और संघर्ष वायु किसान की उज्ज्वल गाथा कहती है और सूर्य उसका रथ बताया गया है। इन बिंबों से खुले आकाश तथा प्रकृति के बीच चलने वाला उसका कर्ममय जीवन विराट दिखाई देता है। दिन के प्रकाश के साथ उसकी श्रमयात्रा आगे बढ़ती है। किंतु यह यात्रा सुख-सुविधाओं से भरी नहीं है। 'बीहड़ काँटों भरा कीचमय' पथ उसके कठिन जीवन का चित्र उपस्थित करता है। काँटे और कीचड़ खेती की वास्तविक कठिनाइयों के साथ जीवन की बाधाओं और अभावों का भी संकेत करते हैं। किसान इन परिस्थितियों में भी अन्न उत्पादन का दायित्व निभाता रहता है।

चरण 4: समाज के प्रति कवि का आग्रह कवि कहता है कि शासन, कला और तपस्या किसान को कभी न भूलें। समाज के प्रशासनिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक कार्य भी भोजन और जीवन-निर्वाह पर आधारित हैं; इसलिए अन्न उपजाने वाले का योगदान सबके लिए आवश्यक है। उसे उपेक्षित छोड़कर सभ्यता अपने आधार को ही भुला देगी। अंतिम पंक्तियों में किसान के कंधों पर झूलते अनाज के पूलों का दृश्य है। ये पूले उसके परिश्रम की उपलब्धि हैं और उसके श्रमशील व्यक्तित्व को प्रत्यक्ष रूप में सामने लाते हैं।

चरण 5: काव्य-सौंदर्य और भाषा 'तेरी' और 'तुम्हारा' जैसे संबोधन किसान के प्रति आत्मीय सम्मान व्यक्त करते हैं। वायु के गाथा गाने और रोटी के छवि पहचानने में मानवीकरण है। 'सूर्य तुम्हारा रथ है' में रूपक के माध्यम से किसान की कर्मयात्रा को भव्यता मिली है। काँटों और कीचड़ का दृश्य-बिंब संघर्ष को सजीव करता है। सरल किंतु ओजपूर्ण भाषा तथा छोटे लयात्मक चरण किसान के श्रम के प्रति आदर की भावना को प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 6: निष्कर्ष काव्यांश किसान को अन्नदाता और सभ्यता के पोषक के रूप में प्रतिष्ठित करता है। उसकी फसल में उसका जीवन, संघर्ष और आशा समाए हैं; इसलिए शासन और समाज को उसके श्रम का सम्मान करते हुए उसके योगदान को सदा स्मरण रखना चाहिए।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में फसल, रोटी, सूर्य और कठिन पथ के बिंबों को किसान के श्रम से जोड़ें; अंत में शासन तथा समाज से किए गए सम्मान के आग्रह को स्पष्ट करें।

1(ग). निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मैंने उसको
जब-जब देखा
लोहा देखा
लोहे जैसा
तपते देखा
गलते देखा
ढलते देखा
मैंने उसको
गोली जैसा
चलते देखा ।

[7 अंक]

हल:

अवधारणा:

- केदारनाथ अग्रवाल की कविता में श्रमशील मनुष्य का संघर्ष, धैर्य और कर्मशीलता केंद्रीय भाव हैं। प्रस्तुत अंश में लोहे के बिंब से उसके दृढ़ चरित्र का परिचय मिलता है।
- सप्रसंग व्याख्या में कवि और कविता का परिचय देकर पंक्तियों का आशय तथा उनके प्रतीकात्मक अर्थ स्पष्ट किए जाते हैं।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत काव्यांश कवि केदारनाथ अग्रवाल की कविता 'मैंने उसको जब-जब देखा' से लिया गया है। इसमें कवि संघर्षशील, श्रमशील मनुष्य की अटूट शक्ति का चित्र प्रस्तुत करते हैं। जिस व्यक्ति को कवि देखते हैं, वह कठिन परिस्थितियों से हार मानकर निष्क्रिय नहीं होता; वह लगातार श्रम करता हुआ अपने व्यक्तित्व और जीवन को गढ़ता है। कवि उसके इसी जीवट की तुलना लोहे से करते हैं।

चरण 2: लोहे के बिंब का आशय कवि कहते हैं कि उन्होंने उस मनुष्य को जब भी देखा, उसमें लोहे जैसी दृढ़ता और शक्ति पाई। लोहा आग की तीव्र गर्मी सहता है, गलता है और फिर उपयोगी रूप में ढलता है। इसी प्रकार श्रमशील मनुष्य जीवन के कष्टों में तपता है, संघर्षों का सामना करता है और परिस्थितियों के बीच अपने को नया रूप देता है। यहाँ 'तपते', 'गलते' और 'ढलते' शब्द केवल पीड़ा नहीं बताते; वे कठिन परिश्रम से व्यक्तित्व के निर्माण और परिवर्तन की प्रक्रिया को भी व्यक्त करते हैं। विपत्तियाँ उसकी शक्ति को समाप्त करने के स्थान पर उसे अधिक कर्मठ और उपयोगी बनाती हैं।

चरण 3: गोली जैसी गति और काव्यगत विशेषता अंत में कवि उसे गोली के समान चलते देखते हैं। गोली का बिंब तीव्र गति, लक्ष्य की ओर बढ़ने और रुकावटों को चीरने वाली ऊर्जा का संकेत देता है। यह मनुष्य जड़ या निष्क्रिय नहीं है; उसके भीतर कर्म की प्रबल प्रेरणा है। 'लोहे जैसा' और 'गोली जैसा' में उपमा का प्रयोग इस शक्ति और गति को सजीव करता है। 'देखा' की पुनरावृत्ति कवि के बार-बार के अनुभव को बल देती है। छोटी पंक्तियाँ और क्रियापदों की शृंखला कथन को गतिशील बनाती हैं। साधारण शब्दों में श्रम और संघर्ष की असाधारण गरिमा व्यक्त हुई है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि ने लोहे के तपने, गलने और ढलने तथा गोली की गति के माध्यम से संघर्षशील मनुष्य की दृढ़ता, परिवर्तनशीलता और निरंतर कर्मशीलता का गौरवपूर्ण चित्र अंकित किया है।

त्वरित सुझाव: 'लोहा' को दृढ़ता, 'तपना-गलना-ढलना' को संघर्ष में निर्माण और 'गोली' को तीव्र कर्मशील गति से जोड़कर व्याख्या कीजिए।

2(क). निम्नलिखित काव्यांश का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

मिट्टी में स्वर है, संयम है, होनी-अनहोनी कह जाए,
हँसकर हालाहल पी जाए, छाती पर सब-कुछ सह जाए,
यों तो ताशों के महलों-सी मिट्टी की वैभव-बस्ती क्या,
भूकंप उठे तो ढह जाए, बाढ़ आ जाए तो बह जाए ।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौन्दर्य में भाव की विशेषता के साथ भाषा, बिंब, अलंकार और लय का प्रभाव स्पष्ट किया जाता है।
- इस अंश में मिट्टी की सहनशीलता और उससे बने वैभव की नश्वरता के बीच अर्थपूर्ण संबंध है।

चरण 1: भाव-सौन्दर्य प्रस्तुत पंक्तियों में मिट्टी को धैर्य, संयम और सहनशक्ति के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। वह जीवन की अनुकूल और प्रतिकूल दोनों स्थितियों को व्यक्त करती है तथा विष जैसी पीड़ा को भी हँसकर सह लेती है। 'छाती पर सब-कुछ सह जाए' में उसकी असीम सहनशीलता प्रकट होती है। दूसरी ओर, मिट्टी से बनी वैभवशाली बस्ती का भूकंप में ढह जाना अथवा बाढ़ में बह जाना सांसारिक संपन्नता की अस्थिरता बताता है। बाहरी वैभव स्थायी नहीं है; उसके प्रति अभिमान की निरर्थकता इस चित्र से सामने आती है।

चरण 2: अलंकार और बिंब-सौन्दर्य मिट्टी में स्वर और संयम का होना, उसका हँसना, विष पीना तथा छाती पर कष्ट सहना मानवीय गुणों और क्रियाओं का आरोप है; इसलिए यहाँ मानवीकरण अलंकार है। 'ताशों के महलों-सी' में मिट्टी की वैभव-बस्ती की तुलना ताश के महल से होने के कारण उपमा अलंकार है। यह उपमा उसकी क्षणभंगुरता और दुर्बल आधार को मूर्त कर देती है। 'हालाहल' जीवन की घोर पीड़ा और विषम परिस्थितियों का प्रतीक है। भूकंप तथा बाढ़ के दृश्य विनाश की शक्ति को आँखों के सामने उपस्थित करते हैं।

चरण 3: भाषा और लय का प्रभाव भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और भावानुकूल है। 'स्वर', 'संयम', 'हालाहल' और 'वैभव' जैसे शब्द अर्थ में गंभीरता लाते हैं, जबकि 'ढह जाए' और 'बह जाए' जैसी सहज अभिव्यक्तियाँ दृश्य को स्पष्ट करती हैं। 'होनी-अनहोनी' का विरोधात्मक शब्द-युग्म जीवन के सुख-दुःख और अनिश्चितता को समेटता है। 'कह जाए', 'सह जाए', 'ढह जाए' और 'बह जाए' की ध्वन्यात्मक समानता तथा 'जाए' की आवृत्ति से लय और गेयता आती है। सहनशीलता के शांत भाव और प्राकृतिक विनाश के प्रबल चित्रों का मेल काव्यांश को प्रभावशाली बनाता है।

चरण 4: निष्कर्ष मानवीकरण, सटीक उपमा, प्रतीकात्मक शब्दावली और प्रवाहपूर्ण लय के माध्यम से मिट्टी की सहनशीलता तथा सांसारिक वैभव की नश्वरता सुंदर ढंग से अभिव्यक्त हुई है।

त्वरित सुझाव: पहले मूल भाव लिखिए, फिर 'हँसकर हालाहल पी जाए' में मानवीकरण और 'ताशों के महलों-सी' में उपमा का उदाहरण देकर उनका प्रभाव स्पष्ट कीजिए।

2(ख). निम्नलिखित काव्यांश का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

इस पर भी आदमी
ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा, अविश्वास लीन
संख्यातीत शंख-सी दीवारें उठाता है
अपने को दूजे का स्वामी बताता है
देश की कौन कहे
एक कमरे में
दो दुनिया रचाता है । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट करते समय भाव-पक्ष और शिल्प-पक्ष दोनों समझाने चाहिए। यहाँ मनुष्य की संकीर्णता और आपसी अलगाव पर व्यंग्य प्रमुख है।
- उपमा, प्रतीक और विरोधाभासी स्थिति भाव को तीखा बनाते हैं। भाषा तथा मुक्तछंद की बनावट भी कविता के कथ्य को प्रभाव देती है।

चरण 1: भाव-सौन्दर्य कवि बताता है कि मनुष्य ईर्ष्या, अहंकार, स्वार्थ, घृणा और अविश्वास में डूबकर अपने और दूसरे के बीच असंख्य दीवारें खड़ी करता है। वह दूसरों से समानता और आत्मीयता का संबंध बनाने के स्थान पर उनका स्वामी बनना चाहता है। इस प्रकार बाहरी सभ्यता के बावजूद उसकी मानसिक संकीर्णता बनी रहती है। 'देश की कौन कहे' कहकर कवि व्यापक सामाजिक विभाजन से हमारी दृष्टि घर की छोटी इकाई की ओर लाता है। एक ही कमरे में रहने वाले लोग भी मन से इतने दूर हैं कि उनकी 'दो दुनिया' बन जाती हैं। यह निकटता के भीतर छिपे अलगाव का मार्मिक चित्र है।

चरण 2: शिल्प-सौन्दर्य 'शंख-सी दीवारें' में 'सी' द्वारा उपमा का विधान है। शंख का कठोर आवरण मनुष्य के अपने भीतर बंद हो जाने के भाव को उभारता है। 'दीवारें' मानसिक बाधाओं का और 'दो दुनिया' परस्पर अलग जीवन-दृष्टियों का प्रतीक हैं। ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा और अविश्वास का क्रम मनुष्य में बढ़ती कटुता को सघन करता है। 'अपने को दूजे का स्वामी' बताने में प्रभुत्व की प्रवृत्ति पर व्यंग्य है। मुक्तछंद की छोटी-बड़ी पंक्तियाँ स्वाभाविक कथन-लय देती हैं। विशेषत: 'एक कमरे में' को अलग पंक्ति में रखकर कवि छोटे स्थान और बड़े मानसिक अंतर का प्रभाव बढ़ाता है। भाषा सरल, व्यंजनापूर्ण और विचारप्रधान है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का सौन्दर्य मानवीय संबंधों के विघटन पर तीखे व्यंग्य और दीवारों तथा दो दुनियाओं के प्रभावशाली प्रतीकों में है। कवि संकीर्णता छोड़कर समानता, विश्वास और आत्मीयता अपनाने की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: भाव में मानसिक अलगाव समझाएँ और शिल्प में 'शंख-सी', 'दीवारें' तथा 'दो दुनिया' को पाठ से जोड़कर स्पष्ट करें।

2(ग). निम्नलिखित काव्यांश का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

ऐसे आओ
जैसे गिरि के शृंग शीश पर
रंग-रूप का क्रीट लगाए
बादल आए
हंस-माल-माला लहराए
और शिला-तन —
कांति निकेतन-तन बन जाए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में आगमन की कामना को पर्वत, बादल और हंसों के सुंदर प्राकृतिक बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। भाव और अभिव्यक्ति दोनों का विवेचन काव्य-सौन्दर्य को स्पष्ट करता है।
- उपमा, मानवीकरण तथा रूपक प्रकृति के इस दृश्य को सजीव बनाते हैं। रंग, गति और प्रकाश के बिंब परिवर्तन तथा सौन्दर्य की अनुभूति देते हैं।

चरण 1: भाव-सौन्दर्य कवि संबोधित व्यक्ति से ऐसे आने का अनुरोध करता है जैसे पर्वत-शिखर पर सुंदर बादल आते हैं। रंग और रूप की छटा बिखेरते बादल शिखर के सिर पर मुकुट जैसे दिखाई देते हैं। उनके साथ हंसों की पंक्तियों के हार लहराने का मनोरम दृश्य बनता है। इस आगमन से कठोर पत्थरों वाला पर्वत भी सुंदर प्रकाश और शोभा का घर बन जाता है। कवि चाहता है कि आने वाले का आगमन भी ऐसा ही आनंददायक और परिवर्तनकारी हो, जो नीरसता तथा कठोरता को सुंदरता से भर दे। केवल आना पर्याप्त नहीं; आगमन में ऐसी सृजनशील शक्ति होनी चाहिए जो आसपास के जीवन को भी आलोकित कर सके।

चरण 2: शिल्प-सौन्दर्य 'ऐसे आओ, जैसे' में आगमन की तुलना बादलों के आने से होने के कारण उपमा है। पर्वत-शिखर को 'शीश' और बादलों की छटा को उस पर सजा मुकुट मानने से मानवीकरण तथा रूपक का सुंदर विधान हुआ है। 'हंस-माल-माला' में हंसों की पंक्तियाँ हार का बिंब बनाती हैं। 'शिला-तन' और 'कांति निकेतन-तन' में पर्वत के पथरीले रूप से शोभामय रूप तक का परिवर्तन मूर्त होता है। दृश्य-बिंबों के साथ 'लहराए' में गति का बिंब भी है। 'आओ', 'आए', 'लगाए', 'लहराए' और 'जाए' की ध्वनि-समानता गीतात्मक लय तथा संगीतात्मकता बढ़ाती है। संस्कृतनिष्ठ किंतु चित्रात्मक शब्दावली दृश्य की भव्यता के अनुरूप है। छोटी पंक्तियों और मुक्त लय से आह्वान में आत्मीयता आती है।

चरण 3: निष्कर्ष प्राकृतिक दृश्य की सजीवता, आगमन की मंगल-कामना और कठोरता को सौन्दर्य में बदलने वाला भाव इस काव्यांश का मुख्य आकर्षण है। उपमा, रूपक, मानवीकरण और मधुर लय इसे प्रभावशाली बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: 'ऐसे-जैसे' की तुलना से आरंभ करें और फिर पर्वत, मुकुट, हंस-माला तथा प्रकाश के बिंबों का भाव स्पष्ट करें।

3(क). 'कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो' पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कवि किस प्रकार का जीवन जीने की इच्छा प्रकट करता है। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस पद में कवि संतों जैसा शांत, संतोषी और परोपकारी जीवन अपनाने की इच्छा व्यक्त करता है। उसका आदर्श बाहरी वैभव के स्थान पर आचरण की पवित्रता है।
- कवि के लिए ईश्वर की भक्ति और सदाचरण परस्पर जुड़े हैं। मन, वचन और कर्म से दूसरों का हित करना तथा सुख-दुख में सम रहना इसी आदर्श के अंग हैं।

चरण 1: संतोष और परहित की भावना कवि चाहता है कि श्रीरघुनाथ की कृपा से उसे संतों का स्वभाव प्राप्त हो। जो कुछ उचित रूप से

मिल जाए, उसी में वह सदा संतुष्ट रहे और किसी से कुछ पाने की लालसा न रखे। यह संतोष उसे लोभ और दूसरों पर अनावश्यक निर्भरता से मुक्त करेगा। वह केवल अपने सुख में सीमित रहने के बजाय निरंतर दूसरों की भलाई में लगा रहना चाहता है। उसका परोपकार दिखावे तक सीमित न हो; विचार, वाणी और व्यवहार तीनों में दूसरों के हित का नियम निभे।

चरण 2: सहनशीलता, विनम्रता और समभाव कवि ऐसा संयमी जीवन चाहता है जिसमें असहनीय कठोर वचन सुनकर भी उसका मन क्रोध से न जले। वह अपमान का प्रतिशोध लेने के बजाय शांत और शीतल बना रहे। अहंकार त्यागकर वह दूसरों के गुण ग्रहण करे और उनके दोषों की चर्चा से बचे। शरीर से जुड़ी चिंताओं में उलझने के स्थान पर सुख तथा दुख दोनों को समान बुद्धि से सहन करे। इस प्रकार उसकी साधना केवल पूजा का कर्मकांड नहीं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में भी संतुलित और उदार रहने का अभ्यास है।

चरण 3: अविचल भक्ति का जीवन-लक्ष्य कवि की इच्छा है कि वह इस सदाचार के मार्ग पर स्थिर रहकर भगवान की अटूट भक्ति प्राप्त करे। वह सांसारिक उपलब्धियों की मांग नहीं करता, बल्कि ऐसा अंत:करण चाहता है जो लोभ, क्रोध और अभिमान से मुक्त हो। संतोष, परहित और सहिष्णुता उसके जीवन को भक्तिमय बनाते हैं। अत: पद में व्यक्त जीवन-आकांक्षा का केंद्र संत जैसा निर्मल चरित्र और प्रभु के प्रति अचल प्रेम है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि संतोषी, निष्काम, परोपकारी, विनम्र और सहनशील जीवन जीना चाहता है। सुख-दुख में समभाव रखते हुए वह संतों का स्वभाव अपनाकर श्रीराम की अविचल भक्ति प्राप्त करने की कामना करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में संतोष, मन-वचन-कर्म से परहित, कटुवचन की सहनशीलता, अहंकार-त्याग और अचल भक्ति को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

3(ख). 'जागो फिर एक बार' कविता के सन्देश को अपने शब्दों में लिखिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस कविता का केंद्रीय संदेश सुप्त आत्मशक्ति को पहचानकर निर्भय और कर्मशील बनना है। कवि का जागरण-आह्वान मानसिक जड़ता तथा हीनभावना से मुक्ति का आग्रह है।
- आत्मगौरव और स्वतंत्रता की चेतना कविता में साथ-साथ आते हैं। अतीत के शौर्य का स्मरण वर्तमान में साहस तथा सक्रिय प्रतिरोध की प्रेरणा देता है।

चरण 1: आत्मविश्वास और सुप्त शक्ति का जागरण निराला मनुष्य और देशवासियों को उनकी सोई हुई शक्ति पहचानने का संदेश देते हैं। लंबे समय की निष्क्रियता और पराधीनता व्यक्ति में दुर्बलता का बोध भर देती है। कवि इस आत्महीनता को दूर करना चाहते हैं। मनुष्य का वास्तविक स्वरूप महान और समर्थ है; उसे अपने को असहाय मानकर भाग्य के भरोसे नहीं बैठना चाहिए। जागने का अर्थ केवल नींद छोड़ना नहीं, अपने सामर्थ्य के प्रति सजग होकर कर्तव्य के लिए तैयार होना है।

चरण 2: वीरता, स्वाभिमान और स्वतंत्रता की प्रेरणा कवि भारतीय वीरता और बलिदान की परंपरा का स्मरण कराते हैं। इसका उद्देश्य केवल अतीत का गुणगान करना नहीं, बल्कि वर्तमान पीढ़ी में शौर्य जगाना है। सिंह और निर्बल पशु के बिंबों के माध्यम से वे बताते हैं कि कायरता अन्याय को बढ़ावा देती है। देशवासियों को भय और दीनता छोड़कर स्वाभिमान के साथ अन्याय तथा पराधीनता का सामना करना चाहिए। स्वतंत्र जीवन के लिए साहस और संघर्ष की तत्परता आवश्यक है।

चरण 3: चेतना को कर्म में बदलना कविता का आह्वान निष्क्रिय गर्व तक सीमित नहीं है। कवि चाहते हैं कि जागृत आत्मविश्वास जीवन में सक्रिय प्रयत्न बने। व्यक्ति अपनी क्षुद्र चिंताओं और निराशा से ऊपर उठे, अपनी गरिमा समझे और समाज तथा राष्ट्र के उत्थान में भाग ले। इस प्रकार कविता स्वतंत्रता, निर्भयता और कर्मशीलता का संदेश देती है। उसके प्रेरक स्वर में यह विश्वास है कि अपनी अंतर्निहित शक्ति पहचान लेने पर मनुष्य कठिन परिस्थितियों को बदल सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता का संदेश है कि देशवासी जड़ता, भय और हीनभावना त्यागकर अपनी शक्ति तथा गौरव पहचानें। वीरता और आत्मविश्वास के साथ जागकर स्वतंत्रता एवं राष्ट्रीय उत्थान के लिए कर्म करें।

त्वरित सुझाव: संदेश लिखते समय जागरण का अर्थ स्पष्ट कीजिए और उसे आत्मगौरव, निर्भयता, स्वतंत्रता तथा सक्रिय कर्म से जोड़िए।

3(ग). 'जड़ की मुसकान' कविता के आधार पर जड़ की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन की कविता में वृक्ष के विभिन्न अंगों का संवाद अपने मूल आधार को भूलकर अभिमान करने की प्रवृत्ति उजागर करता है।
- जड़ का महत्त्व उसके दिखावे में नहीं, पूरे वृक्ष को जीवन और स्थिरता देने वाले मौन योगदान में है।

चरण 1: वृक्ष के अंगों के अभिमान को समझना तना अपने ऊपर उठने, डालियाँ अपने फैलने, पत्तियाँ अपने स्वर और फूल अपने सौंदर्य तथा सुगंध पर गर्व करते हैं। प्रत्येक अंग अपनी विशेषता को श्रेष्ठ मानकर उस आधार का महत्त्व भुला देता है जिससे उसका विकास संभव हुआ है। जड़ धरती के भीतर रहती है, इसलिए उसका श्रम दिखाई नहीं देता। उसका छिपा होना उसकी निरर्थकता का प्रमाण नहीं है। बाहरी चंचलता और प्रदर्शन को ही जीवन का मानदंड मान लेने के कारण ये अंग जड़ की उपयोगिता नहीं समझ पाते। इस प्रकार उनका गर्व अपनी निर्भरता की उपेक्षा पर टिका है।

चरण 2: जड़ के योगदान और मुसकान का अर्थ जड़ मिट्टी से जल और पोषण ग्रहण करके वृक्ष के जीवन को बनाए रखती है और उसे धरती से जोड़े रखती है। उसके बिना तने की दृढ़ता, डालियों का विस्तार तथा पत्तियों और फूलों की शोभा टिक नहीं सकती। वह दूसरों की तरह अपना गुणगान नहीं करती; सबकी बातें सुनकर मुसकराती है। उसकी मुसकान अपने वास्तविक महत्त्व का शांत बोध व्यक्त करती है। कवि इसके माध्यम से उन मौन कर्मशील आधारों के प्रति कृतज्ञता सिखाते हैं जिन पर दूसरों की उपलब्धियाँ निर्भर करती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जड़ की सार्थकता पूरे वृक्ष को पोषण, स्थिरता और जीवन देने में है। उसकी निःस्वार्थ सेवा तथा अहंकाररहित मुसकान बताती है कि दिखाई देने वाली सफलता के पीछे छिपे मूल आधार का सम्मान आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में जड़ का पोषण, वृक्ष का उससे संबंध और मौन मुसकान का भाव जोड़कर उसकी सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

4(क). प्रस्तुत गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

देशप्रेम यदि 'आत्मा की घटना' है, तो वह सिर्फ़ एक ऐसी संस्कृति में पल्लवित होती है, जहाँ 'स्पेस' और 'स्मृति' अंतर्गुफित हो सकें। मनुष्य और पशु के संबंध की बात तो अलग रही, उन चीज़ों का परस्पर संबंध भी बहुत गहरा हो, जो ऊपर से अजीवंत दिखाई देते हैं ... पत्थर, नदी, पहाड़, पेड़ .... आपस में किंतु अपने अंतर्संबंधों में वे एक जीवंत पवित्रता का गौरव, एक तरह की धार्मिक संवेदना ग्रहण कर लेते हैं। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में प्रस्तुत अंश का प्रसंग, उसके प्रमुख विचारों का क्रमबद्ध अर्थ और अभिव्यक्ति की विशेषता स्पष्ट की जाती है।
- इस गद्यांश में देशप्रेम को भूभाग, सांस्कृतिक स्मृति और समस्त परिवेश के आत्मीय संबंध से उत्पन्न आंतरिक अनुभूति माना गया है।

चरण 1: प्रसंग और मूल विचार प्रस्तुत गद्यांश में लेखक देशप्रेम के सांस्कृतिक और आत्मिक आधार को स्पष्ट करते हैं। प्रसंग यह है कि देश से लगाव केवल उसकी भौगोलिक सीमाओं को पहचान लेने से पैदा नहीं होता। किसी स्थान के साथ मनुष्य की स्मृतियाँ, परंपराएँ और जीवनानुभव जुड़ते हैं, तब वह स्थान उसके लिए आत्मीय बनता है। इसी संबंध को लेखक देशप्रेम के भीतर सक्रिय मानते हैं।

चरण 2: आत्मा की घटना तथा स्थान और स्मृति का संबंध देशप्रेम को आत्मा की घटना कहने का आशय है कि वह मनुष्य की गहरी अनुभूति और उसके अस्तित्व के बोध से संबंधित है। यहाँ स्पेस का अर्थ देश का स्थान अथवा भौतिक परिवेश है और स्मृति का अर्थ उससे जुड़ी सांस्कृतिक यादें हैं। अंतर्गुफित होने का अर्थ है इन दोनों का परस्पर इस प्रकार जुड़ना कि उन्हें अलग करके न देखा जा सके। नदी, पहाड़ या पेड़ तभी केवल दृश्य पदार्थ नहीं रहते, जब उनके साथ समुदाय की यादें और आत्मीय अनुभव भी जुड़े हों। ऐसी संस्कृति में देश के प्रति प्रेम भीतर से विकसित होता है।

चरण 3: प्रकृति के अंतर्संबंधों का आशय लेखक मनुष्य और पशु के बीच संबंध से आगे बढ़कर पत्थर, नदी, पहाड़ और पेड़ तक का उल्लेख करते हैं। ऊपर से अजीवंत दिखाई देने वाली वस्तुएँ भी इस सांस्कृतिक दृष्टि में अलग-थलग नहीं हैं। वे अपने पारस्परिक संबंधों

और मनुष्य के उनसे लगाव के कारण एक अर्थपूर्ण समग्र परिवेश बनाती हैं। जीवंत पवित्रता का आशय यह है कि प्रकृति मनुष्य के लिए केवल उपयोग की वस्तु नहीं रह जाती; उसके प्रति सम्मान, अपनापन और श्रद्धा उत्पन्न होती है। धार्मिक संवेदना यहाँ उस पवित्रता-बोध को व्यक्त करती है जिससे समस्त परिवेश आदरणीय अनुभव होता है।

चरण 4: अभिव्यक्ति की विशेषता अंश की भाषा विचारप्रधान और व्याख्यात्मक है। आत्मा की घटना, स्मृति और अंतर्संबंध जैसे पद अमूर्त विचार को व्यक्त करते हैं, जबकि पत्थर, नदी, पहाड़ और पेड़ के ठोस उदाहरण उसे स्पष्ट बनाते हैं। निर्जीव दिखाई देने वाले परिवेश में जीवंत पवित्रता का अनुभव कराना लेखक की समग्र सांस्कृतिक दृष्टि को सामने लाता है।

चरण 5: निष्कर्ष इस अंश के अनुसार देशप्रेम स्थान और सांस्कृतिक स्मृति के गहरे मेल से विकसित होता है। प्रकृति, मनुष्य और अन्य जीवों के आत्मीय अंतर्संबंध देश को केवल भूभाग से आगे बढ़ाकर श्रद्धा और अपनत्व से भरा सांस्कृतिक संसार बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में आत्मा की घटना, स्पेस-स्मृति और जीवंत पवित्रता का अर्थ खोलकर उन्हें देशप्रेम से जोड़िए।

4(ख). प्रस्तुत गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

जीवन में देह है, जीवन में आत्मा है। देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत, तो आत्मा को हिलना-झुकना नहीं है और देह को निरंतर हिलना-झुकना ही है; नहीं तो हम हो जाएँगे रामलीला के रावण की तरह, जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है — न हिलता है, न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में अंश का केंद्रीय विचार स्पष्ट करते हुए उसके उदाहरण, प्रतीक और जीवन-संदेश का विवेचन किया जाता है।
- यहाँ देह परिवर्तनशील व्यवहार का और आत्मा स्थायी जीवन-मूल्यों का प्रतीक है। विचारों में लचीलापन तथा आदर्शों में दृढ़ता का संतुलन मुख्य प्रतिपाद्य है।

चरण 1: प्रसंग और मूल विचार प्रस्तुत गद्यांश जीवन में परिवर्तन और स्थिरता के उचित संबंध पर विचार करता है। लेखक बताता है कि परिस्थितियों के अनुकूल विचार और व्यवहार बदलना आवश्यक है, किंतु इस परिवर्तन के कारण मनुष्य को अपने मूल आदर्शों से विचलित नहीं होना चाहिए। देह और आत्मा का उदाहरण देकर इसी संतुलित जीवन-दृष्टि को समझाया गया है। अंश का आशय अंधी जड़ता और मूल्यहीन समझौते, दोनों से बचने की प्रेरणा देना है।

चरण 2: देह और आत्मा के उदाहरण की व्याख्या देह नाशशील है; वह समय और परिस्थितियों के प्रभाव से बदलती रहती है। आत्मा को शाश्वत बताकर लेखक जीवन के उन मूल आदर्शों की ओर संकेत करता है जिन्हें स्वार्थ या दबाव के कारण त्यागना उचित नहीं। देह का हिलना-झुकना व्यवहार में आवश्यक अनुकूलन का प्रतीक है। इसके विपरीत आत्मा का न झुकना नैतिक निष्ठा की दृढ़ता व्यक्त करता है। इस प्रकार बदलते जीवन में बाहरी कार्य-पद्धति बदल सकती है, लेकिन उसके पीछे की आदर्शगत प्रतिबद्धता बनी रहनी चाहिए।

चरण 3: रामलीला के रावण का दृष्टांत बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रामलीला का रावण केवल एक निर्जीव पुतला है। उसमें स्वयं हिलने-झुकने की क्षमता नहीं होती। लेखक इस दृश्य उदाहरण द्वारा स्पष्ट करता है कि यदि मनुष्य किसी परिस्थिति में अपने विचारों की समीक्षा ही न करे, तो उसका जीवन भी पुतले जैसा जड़ हो जाएगा। यहाँ झुकने का अर्थ हर अन्याय के सामने समर्पण करना नहीं, बल्कि नई परिस्थिति को समझकर उपयुक्त मार्ग अपनाना है। विचारशील मनुष्य का व्यवहार जीवंत और परिस्थिति के प्रति सजग होना चाहिए।

चरण 4: संदेश और अभिव्यक्ति की विशेषता अंतिम वाक्य पूरे अंश का सार है: विचार लचीले हों और आदर्श स्थिर रहें। साधनों और कार्य-पद्धतियों में विवेकपूर्ण परिवर्तन करते हुए भी जीवन-मूल्यों की रक्षा करना ही वांछित आचरण है। देह-आत्मा का विरोध और रावण के पुतले का परिचित उदाहरण गूढ़ विचार को सरल बनाते हैं। भाषा सहज, तर्कपूर्ण और प्रेरक है। उदाहरण से निष्कर्ष तक बढ़ती शैली पाठक को अपने आचरण पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

चरण 5: निष्कर्ष अंश का संदेश है कि परिस्थितियों के साथ विचार और व्यवहार का समन्वय करते हुए भी मूल आदर्शों की दृढ़ता बनाए रखनी चाहिए। इसी संतुलन से जीवन जड़ता से बचता है और नैतिक दिशा भी सुरक्षित रहती है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में देह-आत्मा के प्रतीकार्थ और रावण के पुतले की जड़ता समझाकर अंत में विचारों तथा आदर्शों का अंतर स्पष्ट करें।

4(ग). प्रस्तुत गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

"हे कलाकार, तुम तो जानते हो, राजनीति में केवल दो ही वर्ण होते हैं : एक सफ़ेद, एक काला। सफ़ेद अपने काले पर पोतने के लिए, काला औरों के सफ़ेद पर पोतने के लिए। कला-नीति में ऐसा नहीं होता। वहाँ तो वर्ण नहीं, रंग होते हैं : विविध रंग। कला-नीति में तो काला भी उतना ही सुन्दर है जितना कोई और रंग। काला राजनीति में कौआ है तो कला-नीति में कोकिल।" [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में संवाद का आशय, प्रयुक्त प्रतीकों का अर्थ और लेखक की दृष्टि स्पष्ट की जाती है।
- सफ़ेद और काला यहाँ राजनीतिक छवि के प्रतीक हैं; कला में विविध रंग जीवन की विविधता और स्वतंत्र सौंदर्य-दृष्टि को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: प्रसंग और विषय प्रस्तुत गद्यांश संवाद के रूप में राजनीति और कला की दृष्टियों का अंतर सामने रखता है। वक्ता कलाकार को संबोधित करके कहता है कि राजनीतिक स्वार्थ और कलात्मक मूल्यांकन के मानदंड अलग हैं। यहाँ राजनीति के उस रूप पर व्यंग्य है जिसमें अपने दोष छिपाना और विरोधियों को बदनाम करना प्रमुख हो जाता है। इसके विपरीत कला जीवन की विविधता को स्वीकार करती है और किसी रंग का मूल्य केवल पूर्वग्रह के आधार पर निर्धारित नहीं करती।

चरण 2: राजनीति में सफ़ेद और काले का आशय राजनीति में दो वर्ण होने का कथन शाब्दिक रंग-विवेचन नहीं, बल्कि स्वार्थपूर्ण आचरण पर तीखा व्यंग्य है। सफ़ेद अपने काले पर पोतने का अर्थ अपने दोषों, अनुचित कार्यों और दुर्बलताओं को छिपाकर अपनी छवि उजली दिखाना है। दूसरों के सफ़ेद पर काला पोतने का अर्थ उनकी अच्छाइयों को कलंकित करके उन्हें बुरा सिद्ध करना है। इस प्रवृत्ति में सत्य और गुण की निष्पक्ष पहचान के स्थान पर अपनी प्रशंसा तथा विरोधी की निंदा का उद्देश्य हावी रहता है।

चरण 3: कला में विविध रंगों का महत्त्व कला-नीति में केवल दो विरोधी खानों में बाँटने की दृष्टि नहीं होती। वहाँ अनेक रंगों और उनके मेल से सौंदर्य उत्पन्न होता है। काला भी अन्य रंगों की तरह कलात्मक अभिव्यक्ति का सार्थक साधन है। किसी रंग को अपने-आप में हीन या अशुभ मान लेने के स्थान पर कलाकार रचना में उसकी भूमिका और प्रभाव देखता है। यह कथन कला की व्यापकता, विविधता-स्वीकृति और पूर्वग्रह से मुक्त दृष्टि को प्रतिष्ठित करता है।

चरण 4: कौए और कोकिल के उदाहरण का अर्थ कौआ और कोकिल दोनों काले होते हैं, किंतु कोकिल अपने मधुर स्वर के कारण प्रिय है। इस उदाहरण में राजनीति का काला निंदा और कलंक का संकेत बनता है, जबकि कला का वही काला माधुर्य और सौंदर्य से जुड़ सकता है। उद्देश्य किसी पक्षी की वैज्ञानिक तुलना करना नहीं, मूल्यांकन की दृष्टि का अंतर स्पष्ट करना है। संवादात्मक संबोधन, सफ़ेद-काले का विरोध, पोतने की क्रिया और कौआ-कोकिल का सजीव उदाहरण भाषा को व्यंग्यपूर्ण तथा प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष गद्यांश राजनीतिक छवि-निर्माण और दूसरों पर दोषारोपण की संकीर्ण प्रवृत्ति पर व्यंग्य करता है। कला की दृष्टि अधिक व्यापक है: वह विविधता स्वीकार करती है और उसी वस्तु में सौंदर्य देख सकती है जिसे पूर्वग्रहपूर्ण दृष्टि नकार देती है।

त्वरित सुझाव: पहले सफ़ेद-काले का राजनीतिक प्रतीकार्थ खोलें, फिर कला के विविध रंगों और कौआ-कोकिल के उदाहरण से दृष्टि का अंतर समझाएँ।

5(क). 'यह देश एक है' निबन्ध के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि मनुष्य के शरीर और मस्तिष्क पर जलवायु का प्रभाव किस प्रकार पड़ता है। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबन्ध में देश की प्राकृतिक विविधता के बीच मानवीय और सांस्कृतिक एकता का विचार प्रमुख है।
- जलवायु मनुष्य की शारीरिक बनावट और जीवन-पद्धति को प्रभावित करती है; इन भेदों को बुद्धि की ऊँच-नीच का आधार नहीं बनाना चाहिए।

चरण 1: शरीर पर जलवायु का प्रभाव 'यह देश एक है' के आधार पर जलवायु का प्रभाव मनुष्य के शरीर पर स्पष्ट दिखाई देता है। अलग-अलग प्रदेशों की गर्मी, सर्दी और प्राकृतिक दशाओं से लोगों के रंग-रूप, शारीरिक गठन तथा रहन-सहन में अन्तर आ जाता है। भोजन और वस्त्रों की आवश्यकताएँ भी स्थानीय वातावरण के अनुसार बदलती हैं। इसीलिए एक देश में रहते हुए भी विभिन्न क्षेत्रों के लोग बाहरी रूप और जीवन-शैली में एक जैसे नहीं दिखाई देते। यह भिन्नता स्वाभाविक भौगोलिक परिस्थितियों का परिणाम है।

चरण 2: मस्तिष्क के सम्बन्ध में लेखक का आशय शरीर पर पड़ने वाले इस प्रभाव को मस्तिष्क की योग्यता के साथ एक ही रूप में नहीं जोड़ना चाहिए। रंग, कद या किसी प्रदेश की जलवायु देखकर किसी मनुष्य को अधिक या कम बुद्धिमान नहीं कहा जा सकता। बौद्धिक विकास में शिक्षा, संस्कार, अनुभव और अवसर महत्त्वपूर्ण हैं। भिन्न जलवायु वाले क्षेत्रों में भी विद्वान, कलाकार और विचारक उत्पन्न होते हैं। इसलिए शारीरिक विविधता मानसिक हीनता या श्रेष्ठता का प्रमाण नहीं है। लेखक का एकता का दृष्टिकोण हमें बाहरी भेदों से ऊपर उठकर समान मानवीय क्षमताओं को पहचानने की प्रेरणा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष जलवायु शरीर, वेशभूषा और रहन-सहन में भिन्नता उत्पन्न करती है, किन्तु उससे बुद्धि की श्रेष्ठता या हीनता निर्धारित नहीं होती। प्राकृतिक विविधता भारतवासियों की बुनियादी मानवीय एकता को समाप्त नहीं करती।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव और बुद्धि की समान सम्भावना को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए; रंग-रूप को बौद्धिक योग्यता का आधार न बनाइए।

5(ख). 'नदी बहती रहे' निबन्ध के आधार पर नदियों को प्रदूषित करने वाले कारणों का उल्लेख करके, दूषित जल से उत्पन्न हानियों को बताइए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'नदी बहती रहे' में नदियों के जीवनदायी स्वरूप और मनुष्य द्वारा उन्हें प्रदूषित करने की समस्या पर विचार है।
- उत्तर में प्रदूषण के कारण तथा दूषित जल के दुष्परिणाम दोनों स्पष्ट करने हैं।

चरण 1: नदियों को प्रदूषित करने वाले कारण औद्योगीकरण और बढ़ती शहरी संस्कृति ने नदियों की निर्मलता को गंभीर क्षति पहुँचाई है। नगरों के नालों का मल-मूत्र और गन्दा पानी बिना शुद्ध किए नदियों में छोड़ दिया जाता है। कारखानों से निकलने वाले विषैले रासायनिक पदार्थ और औद्योगिक अपशिष्ट भी उनमें मिलते हैं। इसके अतिरिक्त नदी में कूड़ा-कचरा, सड़ी-गली वस्तुएँ तथा शव बहाने से जल दूषित होता है। नदियों को जीवन का आधार मानने के बजाय गन्दगी बहाने का साधन समझने की प्रवृत्ति इस संकट का मूल कारण है।

चरण 2: दूषित जल से उत्पन्न हानियाँ प्रदूषित नदी का पानी पीने और दैनिक उपयोग के योग्य नहीं रह जाता। ऐसा जल मनुष्य के स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाता है और जलजनित रोगों को बढ़ाता है। पशु-पक्षी भी इसी जल पर निर्भर होते हैं, इसलिए उनके जीवन पर संकट आता है। जहरीले पदार्थ मछलियों तथा दूसरे जलीय जीवों को नष्ट करते हैं और नदी के प्राकृतिक जीवन-सन्तुलन को बिगाड़ते हैं। जिस नदी का स्वच्छ जल कभी तन-मन को शान्ति देता था, वही गन्दगी और दुर्गन्ध के कारण कष्ट का स्रोत बन जाती है। इससे नदी-तट का परिवेश तथा मनुष्य का नदियों से जुड़ा सांस्कृतिक जीवन भी प्रभावित होता है।

चरण 3: निष्कर्ष नगरों की गन्दगी, औद्योगिक अपशिष्ट और मनुष्य का असावधान व्यवहार नदी-प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं। दूषित जल मानव-स्वास्थ्य, पशु-पक्षियों और जलीय जीवन को हानि पहुँचाकर नदी की जीवनदायिनी शक्ति को क्षीण करता है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रदूषण के स्रोत लिखिए, फिर स्वास्थ्य और जलीय जीवन की हानियाँ; केवल नदी बचाने के उपाय लिखकर प्रश्न का उत्तर अधूरा न छोड़िए।

5(ग). वन का संकल्पना को पेड़-पौधे और पशु स्वीकार क्यों नहीं कर पा रहे थे ? बड़ दादा को यह अहसास कब हुआ कि वन है ? — 'तत्सत्' कहानी के आधार पर उत्तर दीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जैनेन्द्र की कहानी व्यक्ति की संकीर्ण दृष्टि और समग्रता के बोध का अंतर स्पष्ट करती है।
- वन अपने घटकों से अलग कोई प्राणी नहीं, उन सबकी संयुक्त सत्ता है।

चरण 1: वन की संकल्पना अस्वीकार करने का कारण पेड़-पौधे और पशु अपने पृथक अस्तित्व को ही संपूर्ण सत्य मानते थे। किसी को अलग से वन दिखाई नहीं दिया था। वे वन को अपने जैसा कोई जीव समझकर खोजते रहे। शेर को अपनी शक्ति, साँप को अपने गूढ़ ज्ञान और बाँस को अपनी ऊँचाई का अभिमान था। अपने सीमित अनुभवों के कारण वे समझ नहीं पाए कि पेड़, पशु, घास, धरती और पानी मिलकर ही वन हैं। उनके लिए अलग-अलग घटक प्रत्यक्ष थे, पर उनकी समष्टि अदृश्य थी। इसलिए मनुष्य का कथन उन्हें छल लगता था। किसी एक की अनभिज्ञता के स्थान पर सबकी अनभिज्ञता को उन्होंने वन के न होने का प्रमाण बना लिया। यहीं उनके तर्क की सीमा थी: जिस सत्य का उन्हें अनुभव नहीं हुआ, उसे उन्होंने असत्य मान लिया।

चरण 2: बड़ दादा को समग्रता की अनुभूति मनुष्य बड़ दादा की सबसे ऊँची फुनगी पर चढ़ा और वहाँ के दो नए पत्तों को स्नेहपूर्वक संदेश दिया। उन्होंने चारों ओर और नीचे देखकर खंड को समग्र के भीतर अनुभव किया। उसी समय बड़ दादा को अपने शीर्ष से भीतर तक अनुभूति हुई कि वन सर्वत्र है। तब उनकी चेतना व्यक्तिगत अहं से ऊपर उठी और उन्हें वन के अस्तित्व का बोध हुआ। यह केवल किसी नए जीव को देख लेने की घटना नहीं थी, बल्कि देखने की दृष्टि बदलने का प्रसंग था। अब उन्हें समझ आया कि सबके नाम और रूप अलग होते हुए भी वे एक व्यापक व्यवस्था के अंग हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संकीर्ण व्यक्तिबोध वन को स्वीकार करने में बाधक था। व्यापक अनुभूति ने बड़ दादा को समष्टि का सत्य समझाया।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो हिस्से रखें: पहले अलग अस्तित्व का भ्रम, फिर ऊपरी पत्तों के माध्यम से प्राप्त समग्रता का बोध।

6. महादेवी वर्मा अथवा जैनेन्द्र कुमार के जीवन, रचनाओं और भाषा-शैली का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- साहित्यकार के संक्षिप्त परिचय में जीवन, प्रमुख कृतियाँ और भाषा-शैली का संतुलित विवेचन आवश्यक है।
- महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख कवयित्री हैं, जबकि जैनेन्द्र कुमार मनोवैज्ञानिक कथा-साहित्य के प्रमुख रचनाकार हैं।

चरण 1: महादेवी वर्मा का जीवन एवं रचनाएँ महादेवी वर्मा का जन्म 1907 में उत्तर प्रदेश के फ़र्रुख़ाबाद में हुआ था। उनकी उच्च शिक्षा इलाहाबाद में हुई। वे प्रयाग महिला विद्यापीठ से जुड़ी रहीं और नारी-शिक्षा तथा सामाजिक चेतना के विकास के लिए कार्य करती रहीं। उन्होंने साहित्य और जीवन में करुणा तथा मानवीय संवेदना को महत्त्व दिया। उनका निधन 1987 में हुआ।

उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत' तथा 'दीपशिखा' हैं। 'यामा' उनके काव्य का प्रसिद्ध संकलन है। गद्य में 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'श्रृंखला की कड़ियाँ' और 'मेरा परिवार' उल्लेखनीय हैं। उनके संस्मरणों तथा रेखाचित्रों में उपेक्षित मनुष्यों और पशु-पक्षियों के प्रति गहरी आत्मीयता मिलती है।

चरण 2: महादेवी वर्मा की भाषा-शैली उनकी काव्य-भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है, जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों का सुंदर प्रयोग हुआ है। संगीतात्मकता, कोमलता, चित्रात्मकता और प्रतीक-विधान उसकी विशेषताएँ हैं। विरह, वेदना, करुणा और आध्यात्मिक अनुभूति उनके गीतों के प्रमुख स्वर हैं। दीपक, बादल और पथ जैसे प्रतीक भावों को मूर्त बनाते हैं। उनके गद्य में संवेदनशील चित्रण के साथ विचारों की स्पष्टता और सामाजिक प्रश्नों पर निर्भीक दृष्टि मिलती है। भावात्मक, वर्णनात्मक और विचारात्मक शैलियाँ प्रसंग के अनुसार आती हैं।

चरण 3: जैनेन्द्र कुमार का जीवन एवं रचनाएँ जैनेन्द्र कुमार का जन्म 1905 में उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के कौड़ियागंज में हुआ। वे राष्ट्रीय आंदोलन और गांधीवादी विचारों से प्रभावित रहे। हिंदी उपन्यास और कहानी को व्यक्ति के अंतर्मन से जोड़ने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। उनका निधन 1988 में हुआ।

उनके प्रमुख उपन्यास 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र' और 'कल्याणी' हैं। 'पाजेब' तथा 'नीलम देश की राजकन्या' उनकी प्रसिद्ध कहानियों में हैं। 'तत्सत्' में भी वे प्रतीकात्मक कथा के माध्यम से व्यक्ति और समष्टि के संबंध का प्रश्न उठाते हैं। उनकी रचनाओं में पात्रों की बाहरी घटनाओं की अपेक्षा उनके अंतर्द्वंद्व, संबंधों और नैतिक प्रश्नों को अधिक महत्त्व मिलता है।

चरण 4: जैनेन्द्र कुमार की भाषा-शैली उनकी भाषा सामान्यतः सहज, प्रवाहपूर्ण और अर्थगर्भित खड़ी बोली है। छोटे वाक्य, प्रश्न, संवाद और सूक्ष्म संकेत पात्रों की मानसिक स्थिति खोलते हैं। आवश्यकता के अनुसार उनकी अभिव्यक्ति चिंतनशील और दार्शनिक भी हो जाती है। मनोविश्लेषणात्मक शैली उनकी पहचान है; वे पात्र के व्यवहार के पीछे छिपी प्रेरणा और दुविधा को सामने लाते हैं। प्रतीकात्मकता तथा आत्मसंवाद से कथा का भीतरी अर्थ उभरता है। 'तत्सत्' जैसी कहानी में पेड़-पौधों और पशुओं के संवाद दार्शनिक विचार को सहज कथारूप देते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष महादेवी वर्मा की विशिष्टता करुणा, गीतात्मक संवेदना और समर्थ गद्य में है; जैनेन्द्र कुमार की पहचान अंतर्मन के विश्लेषण तथा चिंतनशील कथा-शैली से बनती है। प्रश्न के विकल्पों के अनुसार दोनों साहित्यकारों के परिचय प्रस्तुत हैं।

त्वरित सुझाव: परिचय को जीवन, रचनाएँ और भाषा-शैली के क्रम में लिखें; काव्य-संग्रह और गद्य-कृतियों को सही विधा के साथ याद रखें।

7(क). 'एक पत्र' के लेखक धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व-निर्माण में उनके मामा-मामी के योगदान का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तित्व-निर्माण में आर्थिक सहायता के साथ स्नेह, संरक्षण और उचित प्रोत्साहन का भी महत्त्व होता है।
- आत्मकथात्मक पत्र में बताए गए पारिवारिक प्रसंगों से मामा और मामी की अलग-अलग भूमिकाएँ स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: संकट के समय मिला संरक्षण धर्मवीर भारती के पिता की मृत्यु के बाद परिवार गहरे आर्थिक संकट में पड़ गया था। उनकी माँ छोटी बहन को लेकर नौकरी करने चली गईं और भारती अपने मामा अभयकृष्ण चौधरी के पास रहे। ऐसे कठिन समय में मामा ने उनका सहारा बनकर उन्हें संरक्षण दिया। इस सहायता के कारण पढ़ाई से उनका संबंध बना रहा और जीवन की कठिनाइयों के बीच उन्हें आगे बढ़ने का अवसर मिला।

चरण 2: स्नेह और प्रेरणा का प्रभाव मामी ने भारती को अत्यंत आत्मीय, मातृवत् स्नेह दिया। इससे पिता के अभाव और परिवार से अलग रहने की स्थिति में उन्हें भावनात्मक संबल मिला। मामा लगातार उन्हें खूब पढ़ने-लिखने तथा जीवन में कुछ बड़ा करने की प्रेरणा देते रहे। उन्होंने भारती की साहित्यिक अभिरुचि को भी प्रोत्साहित किया। इस प्रकार शिक्षा की निरंतरता, आत्मविश्वास और रचनात्मक विकास में मामा-मामी दोनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। उनके योगदान में जीवन की व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति और मन को आगे बढ़ने की दिशा देना, दोनों पक्ष सम्मिलित थे।

चरण 3: निष्कर्ष मामा ने संरक्षण, पढ़ाई में सहायता और साहित्य-सृजन की प्रेरणा दी; मामी ने मातृवत् स्नेह देकर उनके व्यक्तित्व को संवारा।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मामा की सहायता और प्रेरणा तथा मामी के स्नेह को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

7(ख). 'सत्यकिरण' एकांकी के सभी पात्र अपने ऊपर सत्यकिरण के प्रयोग से क्यों कतरा रहे थे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- एकांकी के पात्रों के व्यवहार का कारण उनके कथन और वास्तविक आचरण के अंतर से समझा जाता है।
- सत्य उजागर होने का भय व्यक्ति की छिपी कमजोरियों और सामाजिक दिखावे को सामने लाता है।

चरण 1: प्रयोग के परिणाम का भय सत्यकिरण के प्रयोग से पात्रों की छिपी हुई वास्तविकता प्रकट हो सकती थी। सबके जीवन में ऐसी

बातें थीं जिन्हें वे दूसरों से छिपाए रखना चाहते थे। इसलिए अपने ऊपर प्रयोग कराने का अर्थ उनके लिए अपनी पोल खुलवाना था। वे सत्य की चर्चा तो कर सकते थे, लेकिन स्वयं सत्य की कसौटी पर परखे जाने का साहस उनमें नहीं था।

चरण 2: प्रतिष्ठा और दिखावे को बचाने की इच्छा सभी पात्र अपने-अपने कारणों से अपने दोषों पर पर्दा बनाए रखना चाहते थे। उन्हें आशंका थी कि भीतर की बात बाहर आने पर दूसरों के सामने उनकी बनाई हुई छवि टूट जाएगी और उन्हें लज्जित होना पड़ेगा। इसीलिए वे किसी-न-किसी तरह प्रयोग से बचने का प्रयत्न कर रहे थे। उनका कतराना सत्यकिरण की शक्ति से अधिक अपने ही छिपे आचरण के प्रति उनके भय को प्रकट करता है। एकांकी इसी स्थिति के माध्यम से मनुष्य की कथनी और करनी में अंतर पर व्यंग्य करता है। दूसरे व्यक्ति का सच जानने की उत्सुकता और अपने सच को छिपाने की इच्छा में जो विरोध है, वही पात्रों की मन:स्थिति को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सभी पात्र अपनी पोल खुलने और प्रतिष्ठा नष्ट होने के भय से सत्यकिरण का प्रयोग अपने ऊपर नहीं होने देना चाहते थे।

त्वरित सुझाव: कतराने का कारण बताते हुए छिपे दोष, पोल खुलने का भय और बाहरी प्रतिष्ठा का संबंध जोड़िए।

7(ग). भगिनी निवेदिता का भारतीय महिलाओं के लिए क्या संदेश था ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निवेदिता का संदेश भारतीय नारियों की शक्ति, शिक्षा और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व से जुड़ा है।
- संदेश का उत्तर लिखते समय उनके जीवन-वृत्त के बजाय महिलाओं से की गई अपेक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चरण 1: अपनी शक्ति और सांस्कृतिक आदर्शों को पहचानना भगिनी निवेदिता चाहती थीं कि भारतीय महिलाएँ अपनी शक्ति और अपने महान सांस्कृतिक उत्तराधिकार को पहचानें। वे अपने को दुर्बल न समझें, शिक्षा प्राप्त करें तथा चरित्र, साहस और आत्मविश्वास विकसित करें। भारतीय नारी के त्याग, प्रेम और सेवा जैसे गुणों को वे समाज के निर्माण की महत्त्वपूर्ण शक्ति मानती थीं। इस शक्ति का उपयोग केवल निजी सुख-सुविधा तक सीमित नहीं रहना चाहिए।

चरण 2: परिवार से आगे राष्ट्र के प्रति कर्तव्य उनका संदेश था कि महिलाएँ परिवार के साथ-साथ देश के प्रति भी अपना उत्तरदायित्व समझें। मातृभूमि से प्रेम करें, उसके दु:ख-दर्द को अपना समझें और उसकी सेवा के लिए तत्पर रहें। जिस निष्ठा से वे अपने घर-परिवार के लिए श्रम और त्याग करती हैं, उसी भावना को व्यापक बनाकर देश और समाज के कल्याण में लगाएँ। शिक्षा और जागरूकता से वे दूसरों को भी प्रेरित कर सकती हैं। इस प्रकार उनका संदेश नारी की क्षमता को राष्ट्र के उत्थान से जोड़ता है। इस संदेश में अधिकार के साथ कर्तव्य और व्यक्तिगत विकास के साथ सामूहिक हित की भावना निहित है।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय महिलाएँ शिक्षित, साहसी और जागरूक बनकर अपनी शक्ति पहचानें तथा त्याग और सेवा की भावना से राष्ट्र के निर्माण में भाग लें।

त्वरित सुझाव: संदेश के उत्तर में नारी की शक्ति, शिक्षा और देशसेवा को जोड़िए; केवल जीवन-परिचय मत लिखिए।

7(घ). रमन से मिलने से पूर्व ही, लेखक उनके साथ अपना क्या सम्बन्ध मानने लगे थे ? 'रमन का वात्सल्य' निबन्ध के आधार पर उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गुरु-शिष्य संबंध केवल औपचारिक प्रवेश से नहीं, श्रद्धा और ज्ञान प्राप्त करने की आकांक्षा से भी बनता है।
- संस्मरण में लेखक की पूर्वधारणा और प्रत्यक्ष भेंट का अंतर पहचानकर पूछे गए संबंध को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: भेंट से पहले स्थापित श्रद्धा रमन से प्रत्यक्ष मिलने से पहले ही लेखक उनके प्रति गहरी श्रद्धा रखने लगे थे। रमन का वैज्ञानिक

व्यक्तित्व और ज्ञान उनके लिए प्रेरणा का स्रोत था। उन्हें केवल एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक के रूप में जानना लेखक के लिए पर्याप्त नहीं था; वे उनसे सीखने की इच्छा रखते थे। इसी श्रद्धा के आधार पर लेखक ने अपने मन में उन्हें गुरु का स्थान दे दिया था।

चरण 2: मन से स्वीकार किया गया शिष्यत्व लेखक अपने को रमन का शिष्य मानने लगे थे। यह संबंध किसी प्रत्यक्ष परिचय या पहले से चल रही कक्षा पर आधारित नहीं था, बल्कि ज्ञान के प्रति आकर्षण और गुरु के प्रति आदर पर आधारित था। इसीलिए रमन से मिलने की इच्छा में एक विद्यार्थी की उत्सुकता और अपने गुरु के दर्शन की उत्कंठा सम्मिलित थी। निबंध के शीर्षक में व्यक्त वात्सल्य भी ऐसे आत्मीय संबंध की पृष्ठभूमि में समझ आता है। उत्तर में मुख्य बात यही है कि भेंट से पूर्व ही लेखक की ओर से गुरु के प्रति श्रद्धा और शिष्य होने का भाव बन चुका था। लेखक की दृष्टि में ज्ञान के क्षेत्र का यह संबंध आत्मीयता और आदर से जुड़ा हुआ था।

चरण 3: निष्कर्ष रमन से मिलने से पहले ही लेखक उन्हें अपना गुरु और स्वयं को उनका शिष्य मानने लगे थे।

त्वरित सुझाव: संबंध का नाम पहले लिखिए, फिर श्रद्धा और सीखने की इच्छा से उसका कारण स्पष्ट कीजिए।

8(क). "फूलों से नाता बनाए रखो, परन्तु मिट्टी से तोड़कर नहीं।" 'रानी लक्ष्मीबाई' उपन्यास में यह वाक्य किसने, किनको, किस समय कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग-आधारित उत्तर में वक्ता, श्रोता और कथन का अवसर स्पष्ट करना आवश्यक है।
- यह प्रसंग सौंदर्यप्रियता के साथ शारीरिक सामर्थ्य और धरती से जुड़ाव बनाए रखने का संदेश देता है।

चरण 1: वक्ता और श्रोता यह बात मनूबाई अर्थात भावी रानी लक्ष्मीबाई ने सुंदर, मुंदर, काशी तथा उनसे मिलने आई अन्य स्त्रियों से कही थी। वे उन्हें दासियाँ मानने के स्थान पर अपनी सहेलियाँ बनाना चाहती थीं।

चरण 2: कथन का समय और प्रसंग यह उनके विवाह की तैयारियों के समय का प्रसंग है। स्त्रियाँ अच्छे वस्त्र, आभूषण और केशों में फूल लगाकर आई थीं। मनू उनसे घुड़सवारी, शस्त्रचालन और कुश्ती सीखने की बात कर रही थीं। अखाड़े की मिट्टी से फूलों की तुलना होने पर उन्होंने स्पष्ट किया कि फूलों से प्रेम बनाए रखना चाहिए, किंतु मिट्टी से संबंध छोड़कर नहीं। यहाँ फूल श्रृंगार और मिट्टी कर्मशीलता तथा शक्ति-साधना की प्रतीक है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन मनूबाई ने अपनी सहेलियों और उपस्थित स्त्रियों से विवाह के पूर्व, श्रृंगार और अखाड़े की मिट्टी की चर्चा के समय कहा था।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मनूबाई का नाम, सुंदर-मुंदर-काशी तथा विवाहपूर्व कुश्ती और श्रृंगार की चर्चा, ये तीन बातें जोड़ें।

8(ख). "नाटकशाला में जो हथियार बनते चलते हैं, क्या उनसे अंग्रेज़ नहीं हटाए जा सकते थे ?" इस कथन के संदर्भ को बताते हुए इसके अभिप्राय को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन का आशय वक्ता और श्रोता की बातचीत तथा तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति से स्पष्ट होता है।
- रानी का व्यंग्य मनोरंजन में डूबे राजसत्ताधारियों को पराधीनता के प्रति सचेत करता है।

चरण 1: कथन का संदर्भ यह बात रानी लक्ष्मीबाई ने अपने पति राजा गंगाधरराव से कही थी। नाटकशाला, स्त्रियों के प्रशिक्षण और अंग्रेजों की बढ़ती शक्ति पर बातचीत चल रही थी। राजा ने अंग्रेजों की सफलता का कारण अपने यहाँ की फूट तथा अंग्रेजों के अच्छे हथियार बताए। इसी उत्तर पर रानी ने नाटकशाला के हथियारों का उल्लेख करते हुए व्यंग्य किया।

चरण 2: कथन का अभिप्राय रानी राजा की नाट्यप्रियता और वास्तविक राजनीतिक संघर्ष से विमुखता पर चोट करती हैं। हथियार केवल रंगमंच पर वीरता दिखाने के लिए नहीं, देश और राज्य की रक्षा के लिए उपयोगी होने चाहिए। अंग्रेजों की शक्ति के सामने निष्क्रिय रहने के स्थान पर साहस, संगठन और युद्ध की तैयारी आवश्यक है। कथन में राजा को राजधर्म तथा स्वतंत्रता की रक्षा के प्रति जाग्रत करने की आकांक्षा है।

चरण 3: निष्कर्ष रानी का आशय था कि नाटकीय वीरता से आगे बढ़कर वास्तविक शक्ति और साहस का उपयोग अंग्रेजी आधिपत्य के प्रतिरोध में किया जाए।

त्वरित सुझाव: राजा के अच्छे अंग्रेजी हथियारों वाले तर्क को पहले लिखें, फिर नाट्यप्रियता पर रानी के व्यंग्य का अर्थ खोलें।

9. आपकी दृष्टि में 'रानी लक्ष्मीबाई' उपन्यास का कौन-सा पुरुष पात्र सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है ? उसका चरित्र-चित्रण कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में पात्र के गुण-दोषों को घटनाओं और संवादों के आधार पर स्पष्ट किया जाता है।
- महत्त्वपूर्ण पात्र केवल आदर्श व्यक्ति नहीं होता; कथा और केंद्रीय पात्र के व्यक्तित्व को उभारने वाला पात्र भी महत्त्वपूर्ण होता है।

चरण 1: पात्र का चयन और महत्त्व मेरी दृष्टि में राजा गंगाधरराव उपन्यास के अत्यंत महत्त्वपूर्ण पुरुष पात्र हैं। वे झाँसी के राजा और लक्ष्मीबाई के पति हैं। उनके व्यक्तित्व और रानी के विचारों के अंतर से कथा में तत्कालीन राजसत्ता की सीमाएँ तथा रानी की सक्रिय देशभक्ति स्पष्ट होती है।

चरण 2: कला और सौंदर्य के प्रेमी गंगाधरराव नाटक, संगीत और अभिनय के रसिक हैं। वे नाटकशाला के प्रदर्शन में गहरी रुचि लेते हैं और कलाकारों के काम पर ध्यान देते हैं। मृच्छकटिक के अभिनय की तैयारी के प्रति उनका उत्साह उनकी साहित्यिक और कलात्मक अभिरुचि को प्रकट करता है। इस दृष्टि से वे कला के संरक्षक दिखाई देते हैं।

चरण 3: स्वाभिमान, क्रोध और व्यवहार की कठोरता उनके स्वभाव में राजसी आत्मसम्मान के साथ शीघ्र खिन्न हो जाने की प्रवृत्ति भी है। विवाहोपरांत दरबार में जागीरदार आनंदराय अपनी सेवाओं का उल्लेख करते हैं तो राजा उन्हें झिड़क देते हैं। रानी इस व्यवहार को अनुचित मानती हैं। यह घटना बताती है कि गंगाधरराव कभी-कभी दूसरों के सम्मान और भावनाओं का पर्याप्त ध्यान नहीं रख पाते।

चरण 4: राजनीतिक सीमाएँ और रानी से वैचारिक अंतर राजा अंग्रेजों की सफलता के पीछे उनके उत्तम हथियारों और देश की आपसी फूट को देखते हैं, पर रानी की तरह सक्रिय प्रतिरोध की भावना नहीं दिखाते। स्त्रियों के घुड़सवारी और शस्त्र-प्रशिक्षण के प्रति भी उनका दृष्टिकोण परंपरागत है। रानी के प्रश्न उनकी निष्क्रियता पर चोट करते हैं। इस प्रकार उनका चरित्र केवल दोषपूर्ण नहीं, कला-प्रेम, अधिकारबोध और राजनीतिक दुर्बलता का जटिल मिश्रण है।

चरण 5: निष्कर्ष गंगाधरराव का महत्त्व उनके राजपद के साथ उनके व्यक्तित्व के अंतर्विरोधों में है। उनकी कला-रसिकता और राजनीतिक सीमाओं के माध्यम से लक्ष्मीबाई का दूरदर्शी, कर्मशील और स्वाधीनताप्रिय व्यक्तित्व अधिक उभरता है।

त्वरित सुझाव: चुने हुए पात्र के हर गुण के साथ एक प्रसंग दें और अंत में समझाएँ कि वह रानी तथा कथा के विकास में कैसे सहायक है।

10(क). किन्हीं दो में सन्धि-विच्छेद कीजिए : सद्गति, मनोरंजन, अधिकांश । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संधि-विच्छेद करते समय संयुक्त शब्द के मूल पद और ध्वनि-परिवर्तन को पहचानते हैं।
- व्यंजन, विसर्ग और स्वर संधि के नियम अलग हैं; केवल उच्चारण के आधार पर मूल शब्द न बदलें।

चरण 1: सद्गति और मनोरंजन सद्गति = सत् + गति। यहाँ त् के बाद घोष व्यंजन ग आने से त् का द् हो गया है; यह व्यंजन संधि है। मनोरंजन = मनः + रंजन। यहाँ विसर्ग के परिवर्तन से मनः का रूप मनोरंजन में मनो हो जाता है; यह विसर्ग संधि है।

चरण 2: अधिकांश का विच्छेद अधिकांश = अधिक + अंश। अधिक के अंतिम अ और अंश के आरंभिक अ के मिलने से आ बनता है। यह दीर्घ स्वर संधि है। प्रश्न में किन्हीं दो का निर्देश है; अभ्यास की पूर्णता के लिए तीनों के विच्छेद दिए गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सद्गति = सत् + गति; मनोरंजन = मनः + रंजन; अधिकांश = अधिक + अंश।

त्वरित सुझाव: सद्गति में मूल त्, मनोरंजन में मूल विसर्ग और अधिकांश में अ + अ = आ की पहचान करें।

10(ख). किन्हीं दो में सन्धि कीजिए : उत् + लेख, फणि + ईश्वर, महा + उदधि । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संधि में पास आने वाली ध्वनियों के मेल से उनका रूप बदलता है। संधि का निर्णय लिखित अक्षरों के साथ उनके उच्चारण से भी किया जाता है।
- स्वर-संधि में सवर्ण दीर्घ और गुण के नियम तथा व्यंजन-संधि में निकटवर्ती व्यंजन का प्रभाव पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: व्यंजन-संधि कीजिए उत् + लेख = उल्लेख। यहाँ त् के बाद ल आने पर त् का ल् हो जाता है और दोनों ल मिलकर ल्ल बनाते हैं। अतः मूल पदों को बिना परिवर्तन जोड़कर उत्लेख लिखना अशुद्ध होगा।

चरण 2: स्वर-संधि कीजिए फणि + ईश्वर = फणीश्वर। इ और ई के मेल से दीर्घ ई होता है; यह दीर्घ स्वर-संधि है। महा + उदधि = महोदधि। आ और उ के मेल से ओ होता है; यह गुण स्वर-संधि है। प्रश्न में किन्हीं दो का निर्देश है; अभ्यास के लिए तीनों रूप दिए गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संधि के शुद्ध रूप हैं : उल्लेख, फणीश्वर तथा महोदधि।

त्वरित सुझाव: पहले संधि-स्थल की दो ध्वनियाँ अलग पहचानिए; इ + ई में ई और आ + उ में ओ लिखिए।

10(ग). किन्हीं दो पदों का समास-विग्रह कर समास का नाम भी बताइए : हाथोंहाथ, लम्बोदर, सुख-दुःख । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समास-विग्रह में समस्त पद के घटकों के बीच का सम्बन्ध स्पष्ट किया जाता है। केवल शब्दों को अलग लिखना पूर्ण विग्रह नहीं है।
- अव्ययीभाव में अव्यय की प्रधानता, बहुव्रीहि में किसी अन्य व्यक्ति का बोध और द्वन्द्व में दोनों पदों की समान प्रधानता होती है।

चरण 1: हाथोंहाथ का विग्रह हाथोंहाथ = हाथ ही हाथ में, अर्थात् तत्काल या तुरंत। यह अव्ययीभाव समास है। पूरा पद क्रिया के होने का ढंग या समय बताता है और अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है। इसे हाथों की संख्या बताने वाला पद नहीं समझना चाहिए।

चरण 2: लम्बोदर का विग्रह लम्बोदर = लम्बा है उदर जिसका, अर्थात् गणेश। यह बहुव्रीहि समास है। यहाँ लम्बा उदर भर अभिप्रेत नहीं है; पूरे पद से उस विशेष व्यक्ति का बोध होता है जिसका उदर लम्बा है। इसी अन्यपदार्थ की प्रधानता के कारण इसे कर्मधारय नहीं कहेंगे।

चरण 3: सुख-दुःख का विग्रह सुख-दुःख = सुख और दुःख। यह द्वन्द्व समास है। दोनों भाव समान रूप से प्रधान हैं और विग्रह में उनके बीच और आता है। प्रश्न में किन्हीं दो पदों का निर्देश होने पर भी यहाँ अभ्यास हेतु सभी पदों का विग्रह दिया गया है।

चरण 4: निष्कर्ष हाथोंहाथ : अव्ययीभाव; लम्बोदर : बहुव्रीहि; सुख-दुःख : द्वन्द्व समास।

त्वरित सुझाव: लम्बोदर में जिसका लगाकर व्यक्ति का बोध स्पष्ट कीजिए; सुख-दुःख में और लगाना द्वन्द्व की पहचान है।

11(क). नीचे लिखे वाक्यों में से किन्हीं दो के शुद्ध रूप लिखिए :

(i) हम हमारे देश की सेवा करें ।

(ii) हम हृदय से आपका हार्दिक स्वागत करते हैं ।

(iii) कल वहाँ एक लड़का और लड़की खड़ी थी । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वाक्य-शुद्धि में सर्वनाम का उचित प्रयोग, अनावश्यक पुनरुक्ति तथा कर्ता और क्रिया का लिंग-वचन सम्बन्ध देखा जाता है।
- एक से अधिक कर्ताओं के होने पर क्रिया का वचन उनके संयुक्त आशय के अनुरूप रखा जाता है।

चरण 1: सर्वनाम की अशुद्धि सुधारिए (i) शुद्ध वाक्य : हम अपने देश की सेवा करें। यहाँ देश का सम्बन्ध वाक्य के कर्ता हम से ही है, इसलिए सम्बन्ध बताने के लिए अपने का प्रयोग उपयुक्त है। हमारे के स्थान पर अपने रखने से आत्मवाचक सम्बन्ध स्पष्ट होता है।

चरण 2: अनावश्यक पुनरुक्ति हटाइए (ii) शुद्ध वाक्य : हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं। हार्दिक का अर्थ ही हृदय से किया गया है। इसलिए हृदय से और हार्दिक दोनों को साथ रखने से अर्थ की अनावश्यक पुनरावृत्ति होती है। एक समान रूप से शुद्ध विकल्प है : हम हृदय से आपका स्वागत करते हैं।

चरण 3: क्रिया का लिंग-वचन सुधारिए (iii) शुद्ध वाक्य : कल वहाँ एक लड़का और एक लड़की खड़े थे। लड़का और लड़की दो कर्ता हैं, अतः क्रिया बहुवचन में होगी। पुल्लिंग और स्त्रीलिंग कर्ताओं के संयुक्त प्रयोग में यहाँ खड़े थे उपयुक्त है। खड़ी थी केवल एक स्त्रीलिंग कर्ता के अनुरूप होता। सभी विकल्प अभ्यास के लिए सुधारे गए हैं।

चरण 4: निष्कर्ष (i) हम अपने देश की सेवा करें। (ii) हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं। (iii) कल वहाँ एक लड़का और एक लड़की खड़े थे।

त्वरित सुझाव: सुधारते समय पहले कर्ता खोजिए, फिर क्रिया मिलाइए और अन्त में समान अर्थ वाले अनावश्यक शब्द हटाइए।

11(ख). नीचे लिखे वाक्यों में यथास्थान सही विराम-चिह्न लगाइए :

(i) हे कवि आप कहाँ रहते हैं

(ii) सुनो सुबह जल्दी उठा करो [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विराम-चिह्न वाक्य का भाव, ठहराव और उद्देश्य स्पष्ट करते हैं। सम्बोधन या ध्यान आकर्षित करने वाले पद के बाद उपयुक्त विराम आवश्यक है।
- प्रश्न पूछने पर प्रश्नवाचक चिह्न और सामान्य कथन या निर्देश के अन्त में पूर्ण विराम लगाया जाता है।

चरण 1: पहले वाक्य का भाव पहचानिए पहले वाक्य में हे कवि सम्बोधन है और आप कहाँ रहते हैं एक सीधा प्रश्न है। सम्बोधन के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न लगाया जा सकता है। प्रश्न के अन्त में प्रश्नवाचक चिह्न आवश्यक है। शुद्ध रूप है : हे कवि! आप कहाँ रहते हैं? यहाँ कहाँ शब्द भी प्रश्न का आशय स्पष्ट करता है; इसलिए अन्त में केवल पूर्ण विराम देना उचित नहीं होगा।

चरण 2: दूसरे वाक्य में विराम लगाइए दूसरे वाक्य में सुनो कहकर श्रोता का ध्यान आकर्षित किया गया है। उसके बाद थोड़े ठहराव के लिए अल्पविराम आएगा। सुबह जल्दी उठा करो एक सामान्य निर्देश है; इसके अन्त में पूर्ण विराम लगेगा। शुद्ध रूप है : सुनो, सुबह जल्दी उठा करो। यह प्रश्न नहीं है, इसलिए इसके अन्त में प्रश्नवाचक चिह्न नहीं लगेगा।

चरण 3: निष्कर्ष (i) हे कवि! आप कहाँ रहते हैं?

(ii) सुनो, सुबह जल्दी उठा करो।

त्वरित सुझाव: सम्बोधन, प्रश्न और निर्देश अलग पहचानिए; कहाँ वाले सीधे प्रश्न के अन्त में प्रश्नवाचक चिह्न अवश्य लगाइए।

12(क). महानगरों में जो सभ्यता फैली है, वह छिछली और हृदयहीन है। लोगों के पारस्परिक मिलन के अवसर तो बहुत हो गए हैं, मगर इस मिलन में हार्दिकता नहीं होती, मानवीय सम्बन्धों में घनिष्ठता नहीं आ पाती। दफ़्तरों, ट्रामों, बसों, रेलों, सिनेमाघरों, सभाओं और कारखानों में आदमी हर समय भीड़ में रहता है, मगर इस भीड़ के बीच वह अकेला होता है। मनुष्य के लिए मनुष्यत्व के भीतर पहले जो माया, ममता और सहानुभूति के भाव थे, वे अब लापता होते जा रहे हैं। देशों की पारस्परिक दूरी घट गई है, लेकिन आदमी और आदमी के बीच की दूरी बढ़ती जा रही है।

उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक गद्यांश के केन्द्रीय भाव को संक्षेप में व्यक्त करता है। केवल किसी एक उदाहरण को शीर्षक बनाना पर्याप्त नहीं होता।
- इस गद्यांश में महानगरों की भीड़ के बावजूद मानवीय सम्बन्धों की आत्मीयता घटने और अकेलापन बढ़ने की बात मुख्य है।

चरण 1: केन्द्रीय विचार पहचानिए लेखक बताता है कि मिलने-जुलने के अवसर बहुत बढ़ गए हैं, पर उनमें हार्दिकता नहीं है। मनुष्य भीड़ में रहकर भी अकेला है और ममता तथा सहानुभूति कम होती जा रही हैं।

चरण 2: विचार को संक्षिप्त शीर्षक दीजिए इन सभी बातों को समेटने वाला उपयुक्त शीर्षक है : महानगरीय सभ्यता में मानवीय अकेलापन। यह महानगर, सभ्यता और सम्बन्धों के संकट को एक साथ व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक : महानगरीय सभ्यता में मानवीय अकेलापन।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय भीड़ में अकेलेपन और घटती आत्मीयता को जोड़िए; बसों या कारखानों को मुख्य विषय न बनाइए।

12(ख). महानगरों की सभ्यता को हृदयहीन क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बोध-प्रश्न के उत्तर में कारण गद्यांश से ही लिया जाता है। हृदयहीन का सम्बन्ध यहाँ मानवीय संवेदना और आत्मीयता के अभाव से है।
- लोगों की भौतिक निकटता और हृदय की निकटता अलग बातें हैं; गद्यांश इसी अन्तर को स्पष्ट करता है।

चरण 1: गद्यांश का आधार पहचानिए लेखक के अनुसार पारस्परिक मिलन के अवसर बढ़े हैं, पर इस मिलन में हार्दिकता नहीं होती। मानवीय सम्बन्धों में घनिष्ठता भी नहीं आ पाती।

चरण 2: हृदयहीन कहने का कारण स्पष्ट कीजिए माया, ममता और सहानुभूति के भाव लुप्त होते जा रहे हैं। इसलिए महानगरीय सभ्यता में लोगों का सम्पर्क तो है, लेकिन एक-दूसरे के प्रति संवेदना और आत्मीय लगाव घट गया है।

चरण 3: निष्कर्ष महानगरों की सभ्यता को हृदयहीन इसलिए कहा गया है कि वहाँ मिलना-जुलना बढ़ने पर भी सम्बन्धों में हार्दिकता और घनिष्ठता नहीं है तथा ममता और सहानुभूति के भाव घटते जा रहे हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में हृदयहीन का अर्थ संवेदनाहीन स्पष्ट कीजिए और गद्यांश के हार्दिकता तथा सहानुभूति वाले कारण जोड़िए।

12(ग). महानगरों की भीड़ में मानव अकेला क्यों है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में अकेलापन लोगों की संख्या कम होने का परिणाम नहीं, बल्कि आत्मीय मानवीय सम्बन्धों के अभाव का परिणाम है।
- कारण बताते समय भीड़ के बाहरी सम्पर्क और हार्दिक सम्बन्ध के बीच का अन्तर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: भीड़ का स्वरूप पहचानिए दफ़्तरों, बसों, रेलों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर मनुष्य लगातार लोगों से घिरा रहता है। फिर भी यह साथ होना उसके लिए आत्मीय सहारा नहीं बन पाता।

चरण 2: अकेलेपन का कारण बताइए इन सम्पर्कों में हार्दिकता नहीं है और सम्बन्धों में घनिष्ठता नहीं आ पाती। ममता तथा सहानुभूति भी घट रही हैं। इसीलिए पास रहने वाले लोग भावनात्मक रूप से दूर हैं और मनुष्य भीड़ में भी अकेलापन अनुभव करता है।

चरण 3: निष्कर्ष महानगरों की भीड़ में मानव इसलिए अकेला है कि लोगों के बीच हार्दिकता, घनिष्ठता और सहानुभूति का अभाव है; भौतिक निकटता के बावजूद वे भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से दूर हैं।

त्वरित सुझाव: भीड़ में अकेलापन समझाते समय लोगों की संख्या के बजाय आत्मीय सम्बन्धों और सहानुभूति के अभाव पर ध्यान दीजिए।

12(घ). "देशो की आपसी दूरी जितनी घट रही है, आदमी और आदमी की दूरी उतनी ही बढ़ रही है" इस दूरी की वृद्धि के कारणों का उल्लेख कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में भौतिक निकटता और मानवीय संबंधों की दूरी के विरोध को समझना आवश्यक है।
- उत्तर का आधार गद्यांश में बताए गए हार्दिकता, घनिष्ठता और अपनत्व के अभाव हैं।

चरण 1: दूरी के कारण पहचानना महानगरों में अस्पतालों, बसों, रेलों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लोग निरंतर मिलते हैं, पर उनके मिलने में हार्दिकता नहीं होती। इसलिए परिचय और संपर्क होने पर भी आत्मीय संबंध नहीं बनते।

चरण 2: गद्यांश के अनुसार उत्तर लोगों के संबंधों में घनिष्ठता और अपनत्व का अभाव है। मनुष्य के प्रति पहले जो माया, ममता और सहानुभूति थी, वह लुप्त होती जा रही है। इन्हीं कारणों से भौतिक दूरियाँ घटने के बावजूद आदमी और आदमी के बीच भावनात्मक दूरी बढ़ रही है।

चरण 3: निष्कर्ष हार्दिकता, आत्मीयता, ममता और सहानुभूति के घटने से मनुष्यों के बीच की दूरी बढ़ रही है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर गद्यांश में आए हार्दिकता, घनिष्ठता और सहानुभूति जैसे शब्दों को जोड़कर संक्षिप्त उत्तर दें।

13. आपकी बस्ती में परिवहन, स्वास्थ्य, सफ़ाई आदि नागरिक सुविधाओं का अभाव है। किसी प्रमुख दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखकर इन असुविधाओं की ओर ध्यान आकृष्ट कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा गया पत्र सार्वजनिक समस्या को समाचार-पत्र के माध्यम से संबंधित अधिकारियों तक पहुँचाता है।
- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, समस्या, सुझाव और हस्ताक्षर आवश्यक हैं।

चरण 1: प्रारूप और उद्देश्य पत्र में बस्ती का नाम तथा परिवहन, स्वास्थ्य और सफ़ाई संबंधी समस्याएँ स्पष्ट करनी हैं। भाषा विनम्र और तथ्यपरक रखकर संपादक से समस्या प्रकाशित करने तथा संबंधित विभागों का ध्यान आकर्षित करने का अनुरोध किया जाएगा।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना पहले नागरिक सुविधाओं के अभाव से उत्पन्न कठिनाइयाँ बताएँगे। फिर नियमित बस सेवा, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, कूड़ा उठाने और नालियों की सफ़ाई की माँग करेंगे। किसी व्यक्ति पर आरोप लगाने के स्थान पर जनहित और शीघ्र कार्रवाई पर ज़ोर देंगे।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 25, शांति बस्ती
जोधपुर, राजस्थान

20 मार्च, 2004
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक नवज्योति,
जोधपुर।
विषय : शांति बस्ती में नागरिक सुविधाओं के अभाव के संबंध में।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं नगर प्रशासन का ध्यान हमारी बस्ती में नागरिक सुविधाओं की गंभीर कमी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

हमारी बस्ती में बसों की संख्या बहुत कम है और उनका कोई नियमित समय नहीं है। इससे विद्यार्थियों तथा काम पर जाने वाले लोगों को प्रतिदिन कठिनाई होती है। निकट कोई सरकारी स्वास्थ्य केंद्र भी नहीं है। बीमारी या दुर्घटना की स्थिति में लोगों को दूर के अस्पताल जाना पड़ता है। आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवार इससे विशेष रूप से प्रभावित होते हैं।

सफ़ाई की व्यवस्था भी असंतोषजनक है। कूड़ा नियमित रूप से नहीं उठाया जाता और नालियाँ गंदगी से भरी रहती हैं। जमा पानी तथा मच्छरों के कारण बीमारियाँ फैलने की आशंका बनी रहती है।

प्रशासन से अनुरोध है कि बस्ती के लिए नियमित बस सेवा उपलब्ध कराई जाए, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खोला जाए तथा कूड़ा उठाने और नालियों की सफ़ाई की स्थायी व्यवस्था की जाए। कृपया इस समस्या को अपने समाचार-पत्र में स्थान देकर संबंधित अधिकारियों को शीघ्र कार्रवाई के लिए प्रेरित करें।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार
बस्ती निवासी

चरण 4: निष्कर्ष यह पत्र नागरिक सुविधाओं की कमी, उससे होने वाली कठिनाइयों और अपेक्षित सुधारों को स्पष्ट करते हुए संपादक से जनहित में हस्तक्षेप का अनुरोध करता है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र में समस्या बताने के बाद उसके व्यावहारिक समाधान और प्रकाशन का स्पष्ट अनुरोध अवश्य लिखें।

अथवा

13. भारतीय स्टेट बैंक की जोधपुर शाखा को कुछ कार्यालय-सहायकों की आवश्यकता है। बैंक के मैनेजर को इस पद के लिए आवेदन-पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आवेदन-पत्र में इच्छित पद, प्रासंगिक योग्यता और अनुभव का स्पष्ट परिचय दिया जाता है।
- बैंक जैसे औपचारिक संस्थान को लिखे पत्र में विनम्र भाषा, सही संबोधन, संपर्क विवरण और संलग्नकों का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप प्रेषक का पता और दिनांक लिखकर भारतीय स्टेट बैंक की जोधपुर शाखा के प्रबंधक को संबोधित करेंगे। विषय में कार्यालय-सहायक पद के लिए आवेदन लिखेंगे। अंत में हस्ताक्षर, संलग्नक और संक्षिप्त व्यक्तिगत विवरण देंगे।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना रिक्त पद के लिए अपनी उम्मीदवारी प्रस्तुत करते हुए शैक्षिक योग्यता, कार्यालयी कार्य करने की क्षमता, कंप्यूटर का ज्ञान और अनुशासन का उल्लेख करेंगे। चयन होने पर ईमानदारी से कार्य करने का आश्वासन देंगे तथा साक्षात्कार का अवसर माँगेंगे।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आवेदन-पत्र 18, प्रताप नगर
जोधपुर, राजस्थान

20 मार्च, 2004
सेवा में,
शाखा प्रबंधक महोदय,
भारतीय स्टेट बैंक,
जोधपुर।
विषय : कार्यालय-सहायक पद हेतु आवेदन।
महोदय,
ज्ञात हुआ है कि आपकी शाखा में कुछ कार्यालय-सहायकों की आवश्यकता है। मैं इस पद के लिए अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरी शैक्षिक योग्यता तथा कार्य संबंधी जानकारी निम्नलिखित है।

मैंने राजस्थान विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। मुझे हिंदी और अंग्रेज़ी टंकण तथा कंप्यूटर पर पत्र तैयार करने और विवरण दर्ज करने का ज्ञान है। मैं दस्तावेज़ों को क्रमबद्ध रखने, अभिलेखों का रखरखाव करने और सामान्य कार्यालयी पत्राचार में सहायता देने में सक्षम हूँ।

मैं परिश्रमी, समयनिष्ठ और अनुशासित हूँ। मुझे लोगों से विनम्र व्यवहार करना तथा सामूहिक रूप से कार्य करना पसंद है। चयन होने पर मैं बैंक के नियमों, गोपनीयता और कार्य के प्रति उत्तरदायित्व का पूरा ध्यान रखूँगा।

मेरी योग्यता संबंधी प्रमाण-पत्रों की प्रतियाँ और संक्षिप्त जीवनवृत्त इस पत्र के साथ संलग्न हैं। कृपया मुझे साक्षात्कार का अवसर प्रदान करें। आवश्यकता होने पर मैं अपने मूल प्रमाण-पत्र प्रस्तुत कर दूँगा।

धन्यवाद।
भवदीय,
अमित शर्मा
संक्षिप्त जीवनवृत्त :
नाम : अमित शर्मा
जन्मतिथि : 15 जुलाई, 1981
शैक्षिक योग्यता : वाणिज्य स्नातक, प्रथम श्रेणी
अन्य योग्यता : कंप्यूटर तथा हिंदी-अंग्रेज़ी टंकण का ज्ञान
पत्राचार का पता : 18, प्रताप नगर, जोधपुर
संलग्नक : शैक्षिक प्रमाण-पत्रों की प्रतियाँ, कंप्यूटर प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र की प्रति।

चरण 4: निष्कर्ष आवेदन में कार्यालय-सहायक पद के अनुरूप योग्यता और कार्यक्षमता बताकर साक्षात्कार का अवसर माँगा गया है।

त्वरित सुझाव: नौकरी के आवेदन में पद का नाम विषय में लिखें और केवल उस पद से संबंधित योग्यताओं को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करें।

---

14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

(क) प्रदूषण की समस्या

(ख) सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा

(ग) नारी और नौकरी

(घ) भ्रष्टाचार का दानव

(ङ) नर हो, न निराश करो मन को

[10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय के केंद्रीय विचार का क्रमबद्ध, तर्कपूर्ण और सुसंगत विस्तार किया जाता है।
- भूमिका, विषय का विवेचन और उपसंहार के बीच स्पष्ट संबंध रखें; भाषा शुद्ध, सहज और प्रभावपूर्ण हो।

चरण 1: निबंध की रूपरेखा बनाएँ निबंध में उपयुक्त शीर्षक, विषय का संक्षिप्त परिचय, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार रखें। सामाजिक विषयों में कारण, प्रभाव तथा समाधान जोड़ें; प्रेरणात्मक विषय में विचार को जीवन के ठोस उदाहरणों से स्पष्ट करें। नीचे पाँचों विषयों के स्वतंत्र नमूना निबंध दिए गए हैं। परीक्षा में चुने हुए किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में लिखें।

चरण 2: क: प्रदूषण की समस्या प्रकृति ने मनुष्य को स्वच्छ वायु, निर्मल जल और उपजाऊ भूमि का अनमोल उपहार दिया है। इन्हीं के सहारे जीवन चलता है। जब वातावरण में हानिकारक पदार्थ इतने बढ़ जाते हैं कि प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने लगता है, तब प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है। आधुनिक विकास की अंधी दौड़ ने इसे हमारे समय की गंभीर चुनौती बना दिया है।

नगरों में बढ़ते वाहन और कारखानों की चिमनियाँ वायु को दूषित करती हैं। नदियों में बहाया गया मलजल, औद्योगिक कचरा और रासायनिक पदार्थ जल को विषैला बनाते हैं। खेतों में रासायनिक खाद तथा कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग मिट्टी की गुणवत्ता घटाता है। प्लास्टिक का कचरा भूमि और जल दोनों के लिए संकट है। तेज लाउडस्पीकर, अनावश्यक हॉर्न और मशीनों का शोर ध्वनि प्रदूषण फैलाते हैं।

इसका प्रभाव केवल मानव स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रहता। दूषित वायु से श्वसन संबंधी रोग बढ़ते हैं और गंदे पानी से अनेक बीमारियाँ फैलती हैं। पक्षियों, मछलियों तथा दूसरे जीवों का प्राकृतिक आवास नष्ट होता है। वृक्षों की कटाई और ईंधनों का अत्यधिक दहन जलवायु संबंधी संकट को भी गंभीर बनाते हैं। अंततः प्रदूषण हमारे भोजन, आजीविका और आने वाली पीढ़ियों की सुरक्षा को प्रभावित करता है।

समाधान के लिए सरकार, उद्योग और नागरिकों को मिलकर काम करना होगा। कारखानों के अपशिष्ट का शोधन हो और पर्यावरण संबंधी कानूनों का ईमानदारी से पालन किया जाए। सार्वजनिक परिवहन, स्वच्छ ऊर्जा तथा वृक्षारोपण को बढ़ावा मिले। घरों में कचरे का पृथक्करण, वस्तुओं का पुनः उपयोग और पानी की बचत उपयोगी कदम हैं। विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा व्यवहार से जुड़नी चाहिए।

विकास आवश्यक है, लेकिन ऐसा विकास चाहिए जो जीवन के आधारों को सुरक्षित रखे। स्वच्छ पर्यावरण कोई विलासिता नहीं, प्रत्येक जीव की आवश्यकता है। यदि हम अपनी दैनिक आदतों में संयम अपनाएँ और सामूहिक उत्तरदायित्व निभाएँ, तो प्रदूषण की समस्या पर प्रभावी नियंत्रण संभव है।

चरण 3: ख: सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा भारत हमारी जन्मभूमि ही नहीं, विविध संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं का जीवंत संगम है। इकबाल की पंक्ति 'सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा' इसी आत्मीयता और राष्ट्रीय गौरव को स्वर देती है। देश के प्रति यह प्रेम हमें उसके सौंदर्य पर गर्व करना और उसकी समस्याओं को अपना समझकर सुलझाना सिखाता है।

उत्तर में हिमालय, विस्तृत मैदान, मरुस्थल, पठार और समुद्री तट भारत की प्राकृतिक विविधता के परिचायक हैं। यहाँ ऋतुओं के बदलते रंग और खेतों की हरियाली मन को आकर्षित करते हैं। नदियों ने सभ्यताओं को पोषित किया है और कृषि ने करोड़ों लोगों को जीवन दिया है। हमारी प्रकृति अपने आप में एक विशाल धरोहर है, जिसकी रक्षा प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

भारत की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता में एकता है। अलग भाषाएँ बोलने और भिन्न धार्मिक विश्वास रखने वाले लोग यहाँ साझा जीवन बनाते हैं। संगीत, साहित्य, चित्रकला, स्थापत्य तथा लोकपरंपराएँ इस समृद्ध सांस्कृतिक संसार को अभिव्यक्त करती हैं। मेलों और त्योहारों में परस्पर सहयोग का भाव दिखाई देता है। हमारी स्वतंत्रता का संघर्ष भी अनेक क्षेत्रों, समुदायों और विचारों के लोगों के संयुक्त प्रयत्नों से सफल हुआ।

स्वतंत्र भारत ने लोकतंत्र, विज्ञान, शिक्षा, कृषि और तकनीक के क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। फिर भी गरीबी, अशिक्षा, भेदभाव तथा भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ हमारे सामने हैं। सच्ची देशभक्ति केवल गौरवगान से पूरी नहीं होती। इसके लिए हमें ईमानदारी से काम करना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना, नागरिक अधिकारों का सम्मान करना और दूसरों के प्रति सहिष्णु रहना चाहिए। समाज में अंतिम व्यक्ति की गरिमा सुरक्षित करना भी राष्ट्रीय सेवा है।

अपने देश को श्रेष्ठ मानने का अर्थ दूसरे देशों का अपमान करना नहीं है। भारत का गौरव मानवता, शांति और सहयोग की भावना में है। जब हम अपनी विविधता का सम्मान करते हुए समानता और न्याय को व्यवहार में उतारेंगे, तभी यह प्रिय पंक्ति हमारे आचरण में साकार होगी। देश हमारा है, इसलिए उसका उज्ज्वल भविष्य बनाने का उत्तरदायित्व भी हमारा है।

चरण 4: ग: नारी और नौकरी नारी और नौकरी का संबंध केवल आय कमाने तक सीमित नहीं है। यह शिक्षा, आत्मसम्मान, स्वतंत्र निर्णय और समान अवसरों का प्रश्न भी है। लंबे समय तक स्त्रियों की क्षमता को घर की सीमाओं में बाँधकर देखा गया। आज वे शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासन, विज्ञान, व्यापार तथा अनेक अन्य क्षेत्रों में अपने कौशल का परिचय दे रही हैं।

नौकरी स्त्री को आर्थिक स्वावलंबन देती है। अपनी आय होने से वह जीवन संबंधी फैसलों में अधिक आत्मविश्वास के साथ भाग ले सकती है। परिवार की आर्थिक स्थिति सुधरती है और बच्चों की शिक्षा तथा स्वास्थ्य पर बेहतर ध्यान दिया जा सकता है। कार्यस्थल पर मिली जिम्मेदारियाँ उसके व्यक्तित्व का विकास करती हैं। समाज को भी प्रशिक्षित और प्रतिभाशाली नागरिकों की पूरी क्षमता का लाभ मिलता

है।

फिर भी नौकरी करने वाली महिलाओं के सामने अनेक कठिनाइयाँ हैं। कई परिवारों में घरेलू काम और बच्चों की देखभाल का अधिकांश भार उन्हीं पर रहता है। घर तथा कार्यालय की दोहरी जिम्मेदारी तनाव बढ़ाती है। असुरक्षित यात्रा, कार्यस्थल पर उत्पीड़न, अवसरों की असमानता और वेतन में भेदभाव उनकी प्रगति रोक सकते हैं। कभी उनकी सफलता को योग्यता के बजाय संकीर्ण सामाजिक धारणाओं से आँका जाता है।

इन समस्याओं का समाधान स्त्री से अधिक त्याग की अपेक्षा करना नहीं है। परिवार के सभी सदस्यों को घरेलू जिम्मेदारियाँ बाँटनी चाहिए। कार्यस्थलों पर सुरक्षित वातावरण, समान काम के लिए समान वेतन और शिकायतों पर निष्पक्ष कार्रवाई आवश्यक है। मातृत्व संबंधी सुविधाएँ, शिशु देखभाल की व्यवस्था और सुविधाजनक परिवहन सहायक हो सकते हैं। लड़कियों को शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण के समान अवसर मिलने चाहिए। लड़कों में भी बचपन से समानता और सहयोग का संस्कार विकसित हो।

नौकरी करना या न करना स्त्री का अपना निर्णय होना चाहिए। गृहकार्य और देखभाल के श्रम का सम्मान भी उतना ही जरूरी है। नारी को समर्थ बनाना परिवार को कमजोर करना नहीं, पूरे समाज को मजबूत बनाना है। उसकी योग्यता को स्वतंत्र अवसर देकर ही न्यायपूर्ण और संतुलित विकास संभव है।

चरण 5: घ: भ्रष्टाचार का दानव भ्रष्टाचार वह आचरण है जिसमें व्यक्ति निजी लाभ के लिए अपने पद, अधिकार या जिम्मेदारी का अनुचित उपयोग करता है। रिश्वत लेना, पक्षपात करना, सार्वजनिक धन हड़पना और नियमों को पैसे के बल पर बदलवाना इसके परिचित रूप हैं। इसे दानव कहना उचित है, क्योंकि यह समाज के विश्वास और नैतिक शक्ति को भीतर से खा जाता है।

भ्रष्टाचार की जड़ें लालच, उत्तरदायित्व के अभाव तथा दंड से बच निकलने की प्रवृत्ति में हैं। जटिल प्रक्रियाएँ और काम में अनावश्यक देरी बिचौलियों को अवसर देती हैं। जब लोग योग्यता के स्थान पर परिचय और धन को सफलता का साधन मान लेते हैं, तब बेईमानी सामान्य व्यवहार लगने लगती है। सामाजिक प्रतिष्ठा को केवल धन से मापना भी इस प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है।

इसका सबसे कठोर प्रभाव कमजोर नागरिकों पर पड़ता है। जिस व्यक्ति के पास रिश्वत देने के साधन नहीं होते, वह अपने अधिकार से भी वंचित रह सकता है। घटिया निर्माण से सड़कें और भवन असुरक्षित बनते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य तथा जनकल्याण का धन गलत हाथों में चला जाता है। ईमानदार लोगों का उत्साह घटता है और शासन के प्रति अविश्वास बढ़ता है। इस प्रकार भ्रष्टाचार आर्थिक हानि के साथ सामाजिक अन्याय भी फैलाता है।

इस दानव से लड़ने के लिए केवल उपदेश पर्याप्त नहीं हैं। सरकारी प्रक्रियाएँ सरल, पारदर्शी और समयबद्ध बननी चाहिए। खर्च तथा निर्णयों की जानकारी जनता को उपलब्ध हो। स्वतंत्र जाँच, निष्पक्ष दंड और शिकायतकर्ताओं की सुरक्षा जरूरी है। तकनीक का उपयोग सीधे सेवाएँ पहुँचाने में सहायक हो सकता है, पर उसकी निगरानी भी आवश्यक है। परिवार तथा विद्यालय में ईमानदारी का व्यवहारिक संस्कार दिया जाए। नागरिक अनुचित माँगों की शिकायत करें और अपने काम में नियमों का सम्मान करें।

भ्रष्टाचार कोई अपरिवर्तनीय नियति नहीं है। जागरूक जनता, उत्तरदायी संस्थाएँ और व्यक्तिगत नैतिक साहस मिलकर इसे कम कर सकते हैं। हमें सुविधाजनक बेईमानी के स्थान पर कठिन ईमानदारी चुननी होगी। तभी सार्वजनिक जीवन में न्याय, विश्वास और सच्चे विकास का मार्ग खुलेगा।

चरण 6: ङ: नर हो, न निराश करो मन को जीवन सुख और दुःख, सफलता और असफलता का निरंतर प्रवाह है। कोई व्यक्ति हर प्रयास में सफल नहीं होता। कभी परिस्थितियाँ विपरीत होती हैं और कभी हमारी तैयारी अधूरी रह जाती है। ऐसे समय 'नर हो, न निराश करो मन को' का संदेश हमें धैर्य, आत्मविश्वास और कर्म की शक्ति का स्मरण कराता है।

निराशा मनुष्य की शक्ति को सीमित कर देती है। जब वह अपने प्रयास को व्यर्थ मान लेता है, तो सामने उपस्थित अवसर भी दिखाई नहीं देते। इसके विपरीत आशा कठिनाई को समझने और समाधान खोजने की प्रेरणा देती है। इसका अर्थ आँख बंद करके सफलता की कल्पना करना नहीं है। वास्तविक आशावाद अपनी कमियों को स्वीकार कर उन्हें सुधारने और फिर से प्रयास करने में प्रकट होता है।

एक विद्यार्थी परीक्षा में अपेक्षित परिणाम न मिलने पर स्वयं को अयोग्य मान सकता है। लेकिन यदि वह गलतियों का विश्लेषण करे, समय का उचित उपयोग करे और शिक्षक का मार्गदर्शन ले, तो प्रगति संभव है। इसी प्रकार किसान प्रतिकूल मौसम के बाद अगली फसल की तैयारी करता है। खिलाड़ी हार से सीखकर अभ्यास बढ़ाता है। ये उदाहरण बताते हैं कि सफलता का आधार केवल प्रतिभा नहीं, निरंतर प्रयत्न भी है।

संकट में मन को संभालने के लिए लक्ष्य को छोटे चरणों में बाँटना उपयोगी है। नियमित परिश्रम, स्वस्थ दिनचर्या और विश्वसनीय लोगों का सहयोग आत्मबल बढ़ाते हैं। दूसरों से तुलना करने के बजाय अपनी प्रगति पर ध्यान देना चाहिए। सहायता माँगना कमजोरी नहीं है।

कुछ परिस्थितियाँ हमारे नियंत्रण में नहीं होतीं; उन्हें स्वीकार करते हुए उपलब्ध साधनों से काम करना ही विवेक है। धैर्य का अर्थ निष्क्रिय प्रतीक्षा नहीं, कठिन समय में भी उचित कर्म जारी रखना है।

मनुष्य की गरिमा उसके संघर्ष करने की क्षमता में है। असफलता अंतिम निर्णय नहीं, नई समझ का आरंभ बन सकती है। हमें अपनी शक्ति पर विश्वास रखते हुए हर दिन सार्थक प्रयास करना चाहिए। आशा, विवेक और श्रम साथ हों तो बाधाओं के बीच भी आगे बढ़ने का रास्ता मिलता है। यही इस प्रेरक विषय का मूल संदेश है।

चरण 7: निष्कर्ष प्रत्येक विषय का निबंध अपनी भूमिका से आरंभ होकर विषयानुकूल निष्कर्ष तक पहुँचता है। प्रदूषण में पर्यावरण संरक्षण, देशप्रेम में नागरिक उत्तरदायित्व, नारी और नौकरी में समान अवसर, भ्रष्टाचार में ईमानदारी तथा अंतिम विषय में आशापूर्ण कर्म का संदेश प्रमुख है।

त्वरित सुझाव: चुने हुए विषय के लिए पहले पाँच संकेत लिखें: परिचय, मुख्य पक्ष, उदाहरण, उपाय और उपसंहार। लगभग 300 शब्दों में इन्हीं संकेतों को जुड़े हुए अनुच्छेदों में विकसित करें।